Study Learning Material (SLM)

of

Bachelor of Art Hons (Hindi)

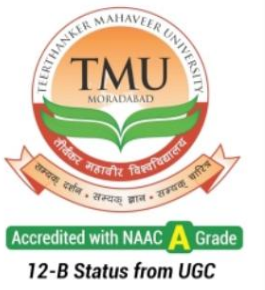

Centre for Distance and Online Education

TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY

N.H.-9, Delhi Road, Moradabad, Uttar

Pradesh244001

Website: www.tmu.ac.in

Semester-I

EXPERT COMMITTEE

Dr.Omprakash Singh,
Assistant Professor
VARDHMAN COLLEGE BIJNOR, U.P.

Dr. Poonam Chauhan
Assistant Professor
S.B.D. GIRLS DEGREE COLLEGE DHAMPUR, U.P.

COURSE COORDINATOR

Dr. Poonam Chauhan
Assistant Professor
Faculty of Education, Teerthanker Mahaveer University. (TMU)

BLOCK PREPARATION

Unit Writers	Assisting & Proof Reading	
Dr. Poonam Chauhan,	**Dr. M. P. Singh**	**Dr. Vinod Kumar Jain**
Assistant Professor	**Professor**	**Associate Professor**
TMU	**TMU**	**TMU**

Secretarial Assistance and Composed By :

Mr. Deepak Malik
Assistant Registrar,
Faculty of Education, TMU

COURSE INTRODUCTION

The Hindi Saahity ka Itihaas course, worth four credits and comprising five blocks, aims to enhance your understanding of political concepts and provide knowledge about various states.

This course adopts a cross-curricular approach to boost both your political and academic knowledge, making it easier and more efficient for you to comprehend study materials in other subjects.

The course is divided into five blocks of different units. The Block titles are as follows:

Block 1 - **हिन्दी साहित्य के प्रमुख ग्रिंथ**

Block 2 - **काल विभाजि की आवश्यकता**

Block 3 - **काल विभाजि की समस्याएँ**

Block 4 - **काल विभाजि नामकरण**

Block 5 - **काल विभाजि की पृष्ठभूमि**

Each Unit is divided into sections and sub-sections. We begin each Unit with a statement of objectives to indicate what we expect you to achieve through the Unit. There are several activities in each section of the Unit which you must attempt. You should then check your answers with those given by us at the end of the Unit.

There are assignments based on this course. After completing the assignments, submitted to the CDOE, TMU. The assignment is evaluated and returned to you with comments which will help you to improve your proficiency in political Science.

We hope you enjoy the Course. Please attempt all the activities and exercises given in the Units.

Acknowledgements:

The material (pictures and passages) we have used is purely for educational purposes.

Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this

book. Should any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future editions of this book.

BLOCK INTRODUCTION

Block 1 (Government of India Act 1858) has one Units. Under this theme we have covered the following topics:

Unit 1 : **हिन्दी साहित्य के स्वरूपऔर पद्धति**

हिन्दी साहित्य का स्वरूप और पद्धति विविधता और गहनता से परिपूर्ण है। इसमें प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक की रचनाएँ शामिल हैं, जो सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करती हैं। कविता, कहानी, नाटक, और उपन्यास जैसी विधाओं में हिन्दी साहित्य ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। साहित्य की पद्धति में विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों और विचारधाराओं का प्रभाव दिखाई देता है, जिससे इसकी विषयवस्तु और अभिव्यक्ति शैली समृद्ध और बहुआयामी हो जाती है।

We suggest you do all the activities in the Units, even those which you find relatively easy. This will reinforce your earlier learning.

Semester-1

Bachelor of Art Hons (Hindi)

DBAH103-हिन्दी साहित्य का इतिहास

BLOCK 1

हिन्दी साहित्य के प्रमुख ग्रंथ

UNIT-01

इकाई का स्वरूप -

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के दौरान आप-

- हिन्दी साहित्य की परिभाषा से परिचित हो सकेंगे।
- हिन्दी साहित्य के स्वरूपऔर पद्धति से अवगत हो सकेंगे।
- हिन्दी साहित्य के प्राचीन ग्रंथ से परिचित हो सकेंगे।

1. प्रस्तावना
2. हिन्दी साहित्य परिभाषाः स्वरूप
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास: एक परिचय
4. हिंदी साहित्येतिहास के प्रमुख ग्रन्थ
5. सारांश
6. कीवर्ड्स (संकेत शब्द)
7. अभ्यास (अति लघु उत्तरीय मूलक प्रश्न)
8. प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)
9. संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का भंडार पर्याप्त समृद्ध है। गद्य तथा पद्य की लगभग सभी विधाओं का प्रचुर मात्रा में साहित्य-सर्जन हुआ है। अनेक कालजयी कृतियाँ सामने आई। लेखक-कवियों ने भी सर्जना के उच्च मानदंड स्थापित किए, जिन पर साहित्य-सृजन को कालबद्ध किया गया, वह युग उनके नामों से जाना गया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गहन शोध और चिंतन के बाद हिंदी साहित्य के पूरे इतिहास पर विहंगम दृष्टि डाली है। हिंदी भाषा के मूर्धन्य इतिहासकार, साहित्यकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का जो इतिहास रचा है, वह सर्वाधिक प्रामाणिक तथा प्रयोगसिद्ध ठहरता है। इससे पहले भी हिंदी का इतिहास लिखा गया, पर आचार्यजी का ज्ञान विस्तृत फलक पर दिग्दर्शित है। इसमें आदिकाल यानी वीरगाथा काल का अपभ्रंश काव्य एवं देशभाषा काव्य के विवरण के बाद भक्तिकाल की ज्ञानमार्गी, प्रेममार्गी, रामभक्ति शाखा, कृष्णभक्ति शाखा तथा इस काल की अन्य रचनाओं को अपने अध्ययन का केंद्र बनाया है। इसके बाद के रीतिकाल के सभी लेखक-कवियों के साहित्य को इसमें समाहित किया गया है। अध्ययन को आगे बढ़ाते हुए आधुनिक काल के गद्य साहित्य, उसकी परंपरा तथा उत्थान के साथ काव्य को अपने विवेचन केंद्र में रखा है। हिंदी साहित्य का क्षेत्र चहुँदिशि विस्तृत है। हिंदी साहित्य के इतिहास को सम्यक् रूप में तथा गहराई से जानने-समझने के लिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह इतिहास-ग्रंथ--

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया गया है-

1. आदिकाल (वीरगाधाकाल)- सन 993 से 1918 तक, संवत् 1050 से 1375 तक

2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)- सन् 1318 से 1643 तक, संवत् 1375 से 1700 तक

3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)- सन् 1643 से 1843, संवत् 1700 से 1900 तक

4. आधुनिक काल- सन् 1843 से आज तक, संवत् 1900 से आज तक

हिन्दी साहित्य परिभाषा : स्वरूप

इतिहास शब्द की व्युत्पति संस्कृत भाषा के तीन शब्दों से (इति-ह-आस) हुआ है। 'इति' का अर्थ है जैसा हुआ वैसा ही' 'ह' का अर्थ है, 'सत्य या सचमुच' तथा 'आस' का अर्थ है, 'निश्चित घटित होना। अथार्त जो घटनाएँ अतीत काल में निश्चित रूप से घटी है, वही इतिहास है। इतिहास का अर्थ इतिहास दो शब्दों के मेल से बना है इतिहास जिसका अर्थ होता है, "ऐसा ही हुआ" अधार्त इतिहास शब्द का अर्थ है। अतीत के

घटित घटनाओं का क्रमबद्ध व्युरो। इतिहास की परिभाषा "इतिहास सामाजिक जीवन की वह शाखा है, जिसके अंतर्गत अतीत काल की घटनाओं या उससे संबंध रखने वाले व्यक्तियों का काल क्रमानुसार अध्ययन किया जाना।

इतिहास की परिभाषा विद्वानों के अनुसारः

'इतिहास (history)' शब्द का प्रयोग 'हेरोडोटस' ने अपनी पहली पुस्तक 'हिस्टोरिका' (historical) में कियाथा। हेरोडोटस को इतिहास का 'जनक' माना जाता है।हेरोडोटस के शब्दों में- "सत्य घटनाओं का क्रमबद्ध अध्व्यन इतिहास है।" हेरोडोटस की पुस्तक का नाम 'हिस्टोरिका' है।भारत में इतिहास के 'जनक' महर्षि वेदव्यास को माना जाता है। उनके द्वारा रचित 'महाभारत' भारत के इतिहास की प्राचीनतम पुस्तक मानी जाती है। महर्षि वेदव्यास ने इतिहास की परिभाषा देते हुए कहा है-

"धर्मार्थ काममोक्षेसु उपदेश समन्वितम् । सत्याख्यान इति इतिहासमुच्ययते।।"

हिन्दी साहित्य का इतिहास: एक परिचय

हिंदी साहित्य, का इतिहास लगभग वर्षों का इतिहास है। साहित्य के इतिहास का काल विभाजन वस्तुतः कठिन कार्य है क्योंकि काल अखण्ड है। इसकी अविच्छिन्न धारा सर्वदा आबाद गति से प्रवाहित होती रहती है। साहित्य एक अविरल गतिशील प्रक्रिया है।

साहित्य समसामयिक परिस्थितियों जन जीवन की आशाओं आकांक्षाओं के परिवतर्न के साथ उपरी तौर से उसका स्वरूप परिवर्तन अवश्य होता रहता है किंतु उसके अंतस्तल मे युग युग से विकसित होने वाली राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना भी प्रवाहमान रहती है। इसलिए वतर्मान अतीत से भिन्न प्रतीत होता हुआ भी उससे अभिन्न रूप से जुड़ा रहता है। दूसरे शब्दों में अतीत के नींव पर वतर्मान का भाव निर्मित होता है। साहित्य के दीर्घकालिन प्रवाह को यदि हम एक दृष्टि से आधन्त देख सके तो बेहतर निष्कर्ष निकल सकता है किंतु प्रवाह विस्तार का बहुत सा अंश हमारी दृष्टि से ओझल भी हो सकता है। इसलिए ध्यायन की सुविधा के लिए हमें इस प्रवाह को खणिडत करना पड़ता है। काल खण्डों के अपेक्षाकृत सीमित फैलाव में साहित्य की अंतनिर्हित चेतना परवृतियो के परिवतर्न की दिशा तथा कारणों की खोज आसानी से हो सकती है।

है। डॉ ग्रियर्सन का काल विभाजन जो प्रमुखतः अध्याय विभाजन है जो इस प्रकार है- के छोटे कवियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है डॉ ग्रियर्सन का काल विभाजन जो प्रमुखतः अध्याय विभाजन है जो इस प्रकार है-

क. चारण काल (700 1300ई.)

ख.पंद्रहवी शताब्दी का धार्मिक पुन जागरण (परिशिष्ट) ग... मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम कविता (परिशिष्ट)
घ. ब्रज का कृष्ण काव्य (1500_1600ई) इ.... मुगल दरबार

(च) तुलसीदास (परिशिष्ट)

(ज)तुलसीदास के अन्य फरवरी (1600_1700ई.)

भाग 2 अन्य कवि (परिशिष्ट)

भाग । धार्मिक कवि

(ठ) महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दूस्तान (1857_1887) (परिशिष्ट)
(ड) विविध इस काल विभाजन में कोई निशिचत आधार स्पष्ट नहीं है।
लगभग एक ही काल के कवि को अलग अलग प्रस्तुत किया गया है। नामकरण में कहीं साहित्यक प्रवृत्ति कहीं राजनीति युग तथा कहीं साहित्यक नेता को केंद्र में रखा गया है। इसमें 14 वी शताब्दी के साहित्य का विवेचन टूट गया है। वैसे डॉ ग्रियर्सन ने समग्र हिंदी साहित्य को समाहित करने की सफल चेष्टा की है पहला काल विभाजन होने के कारण कुछ वप्रवृत्तियों के रहते हुए भी नामकरण प्रवृत्ति निर्धारण काल विभाजन के प्रमुख आधारो के समन्वय की दृष्टि से डॉ प्रियर्सन का योगदान प्रशंसनीय है। मित्र बंधुओं ने मित्र बंधु विनोद में हिंदी साहित्य के इतिहास को प्रकरणों में विभक्त करते हुए भी काल विभाजन का व्यवस्थितआधार अपनाया है।
शुक्ल द्वारा किए गए नामकरण एवं विभाजन पर अपनी सहमति जताई है उनकी असहमति के केंद्र में भी आचार्य शुक्ल ही है अतः संशोधन के साथ इसे स्वीकार करना समीचीन होगा।
हिन्दी साहित्य का स्वरूप -

1. आदिकाल (1000 ई. से 1350 ई. तक)

2. भक्तिकाल (1350 ई. से 1650 ई. तक)

3. रीतिकाल (1650 ई. से 1850 ई. तक)

5. आधुनिक काल (1850 ई. से अब तक)

हिन्दी साहित्य का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है, जो विभिन्न कालखंडों में विकसित हुआ है। इसका विकास मुख्यतः चार प्रमुख कालों में विभाजित किया जाता हैआदिकाल :, भक्तिकाल, रीतिकाल, और आधुनिक काल।

आदिकाल)1000 ई. से1350 ई. तक(.

आदिकाल को वीरगाथा काल भी कहा जाता है। इस काल में रचनाएँ मुख्यतः वीर रस पर आधारित थीं और राजपूत योद्धाओं की वीरता का वर्णन करती थीं। प्रमुख रचनाकारों में चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो) शामिल हैं। इस काल की भाषा अपभ्रंश और अवहट्ट थी। (पदावली) और विद्यापति

भक्तिकाल)1350 ई. से1650 ई. तक)

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम युग माना जाता है। यह काल भक्ति आंदोलन से प्रभावित था और इसे दो भागों में बाँटा जा सकता हैनिर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। :

- **निर्गुण भक्ति**: इसमें ईश्वर की निराकार उपासना की गई। प्रमुख कवि कबीरदास, रैदास, और दादू दयाल हैं।
- **सगुण भक्ति**: इसमें ईश्वर की साकार उपासना की गई। यह राम और कृष्ण भक्ति में विभाजित है। राम भक्ति के कवियों में तुलसीदास और कृष्ण भक्ति के कवियों में सूरदास (रामचरितमानस) शामिल हैं। (सूरसागर)

रीतिकाल (1650 ई. से1850 ई. तक)

रीतिकाल को शृंगार काल भी कहा जाता है। इस काल में शृंगार रस और नायिका भेद का विशेष वर्णन हुआ। कवि राजदरबारों से जुड़े थे और इस काल की प्रमुख विशेषता अलंकारिक भाषा शैली थी। प्रमुख कवियों में बिहारी (बिहारी सतसई), केशवदास (रसिकप्रिया), और पद्माकर शामिल हैं। (जगतविनोद)

आधुनिक काल (1850 ई. सेअबतक)

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य ने विविधता और गहराई प्राप्त की। इस काल में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलावों का प्रभाव साहित्य पर पड़ा। इसे तीन उपविभागों में बांटा जा सकता है:

- **भारतेंदु युग)1850-1900)**: इसे नवजागरण काल भी कहा जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इस युग में हिन्दी साहित्य को नए आयाम दिए। उनकी प्रमुख रचनाएँ भारत " और "भवति वैदिकी हिंसा हिंसा न" हैं। "दुर्दशा
- **द्विवेदी युग)1900-1918)**: इस काल में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य को दिशा दी। उन्होंने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से साहित्य को प्रोत्साहन दिया।
- **छायावाद)1918-1936)**: छायावाद हिन्दी काव्य का महत्वपूर्ण युग है। इसमें व्यक्तिवादी भावना और प्रकृति प्रेम की प्रधानता रही। प्रमुख कवियों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', और महादेवी वर्मा शामिल हैं।
- **प्रगतिवाद और नई कविता)1936-1950)**: प्रगतिवादी साहित्य में सामाजिक यथार्थ और जन समस्याओं का चित्रण हुआ। प्रमुख रचनाकारों में नागार्जुन, त्रिलोचन, और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' शामिल हैं।
- **समकालीन साहित्य)1950 के बाद(**: समकालीन हिन्दी साहित्य में विविधता और प्रयोगशीलता देखी जा सकती है। इसमें कहानी, उपन्यास, नाटक, और काव्य सभी विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रमुख रचनाकारों में मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, और मृदुला गर्ग शामिल हैं।
- हिन्दी साहित्य का यह संक्षिप्त इतिहास इसके गहन और व्यापक स्वरूप को दर्शाता है। प्रत्येक काल ने अपनी विशिष्टता से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है और इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

हिदी साहित्येतिहास के प्रमुख ग्रन्थ

हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखनका वास्तविक सूत्रपात 19 वीं शताब्दी में हुआ क्योंकि इससे पहले जो भी ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जैसे- चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, भक्तमाल आदि में मात्र कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का ही परिचय मिलता है, इतिहास लेखन के लिए जिस शैलीगत की अपेक्षा होती है उसका यहाँ अभाव है। इसीलिए इन्हे इतिहास ग्रन्थ नहीं माना गया। प्रमुख इतिहास ग्रंथों का विवरण निम्नलिखित है-

हिंदी साहित्येतिहास के प्रमुख ग्रन्थ–

इतिहास ग्रन्थ-

- इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी
- द माडर्न वर्नेक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान
- मिश्रबन्धु
- स्केच ऑफ हिंदी लिटरेचर

- ए हिस्ट्री ऑफ़ हिंदी लिटरेचर । हिंदी साहित्य का इतिहास
- हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
- हिंदी साहित्यः उद्भव और विकास हिंदी साहित्य (संपादित)
- हिंदी काव्यधारा
- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास हिन्दी साहित्य का इतिहास (सं.)
- रीतिकाव्य की भूमिका
- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास
- हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य का अतीत (2 भागों में)
- उत्तरी भारत की संत परम्परा
- हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन
- राजस्थानी पिंगल साहित्य राजस्थानी भाषा और साहित्य कविता कौमुदी (दो भाग)
- हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास
- हिंदी वीर काव्य
- हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास
- हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास
- हिंदी साहित्यः बीसवीं शताब्दी

हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले कई अन्य साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की है। इन ग्रंथों में हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों, प्रवृत्तियों, और प्रमुख साहित्यकारों का व्यापक वर्णन मिलता है। यहाँ कुछ प्रमुख साहित्येतिहास ग्रंथों का उल्लेख किया जा रहा है:

अन्य हिन्दी साहित्येतिहास ग्रंथ-

हिन्दी साहित्य का इतिहास -

यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण और प्रामाणिक माना जाता है। इसमें आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य का विस्तृत वर्णन है। रामचंद्र शुक्ल ने साहित्यिक प्रवृत्तियों, विधाओं, और कवियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

1. **हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास** इस ग्रंथ में हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों का विस्तार से वर्णन है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिक आंदोलन, काव्यशास्त्र, और प्रमुख कवियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है।
2. **हिन्दी साहित्य का आदिकाल नगेन्द्र -**

इस ग्रंथ में विशेष रूप से आदिकाल के साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें आदिकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों, भाषाओं, और प्रमुख कवियों का विस्तृत वर्णन है।

3. **हिन्दी साहित्य का इतिहास रामविलास -शर्मा**

रामविलास शर्मा ने अपने इस ग्रंथ में हिन्दी साहित्य के विकास को सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण समाजवादी दृष्टिकोण से किया है।

4. **हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास श्याम सुंदर दास -**

इस ग्रंथ में हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। श्याम सुंदर दास ने साहित्य के विकास क्रम को गहनता से परखा है।

5. **हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास बच्चन सिंह -**

यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य का सरल और सुलभ परिचय प्रदान करता है। इसमें साहित्यिक कालखंडों का वर्णन सहज और बोधगम्य भाषा में किया गया है।

6. **हिन्दी साहित्य का समाजशास्त्रीय इतिहास नामवर सिंह -**

इस ग्रंथ में हिन्दी साहित्य का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। नामवर सिंह ने साहित्य के सामाजिक संदर्भों और प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

ये ग्रंथ हिन्दी साहित्य के इतिहास के अध्ययन और समझ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें साहित्यिक प्रवृत्तियों, कालखंडों, और प्रमुख रचनाकारों का विस्तृत और गहन विश्लेषण मिलता है, जो हिन्दी साहित्य के विविध आयामों को समझने में सहायक होता है।

सारांश

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा प्राचीन है। इतिहास लेखन अपनी दृष्टि और दिशा ढूँढने में सफल रहा है। रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास ही एक पूर्ण इतिहास है क्योंकि इसमें काल विभाजन का वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं पक्का ढांचा तैयार किया गया है। प्रवृत्तियों के निर्धारण एवं कालों के नामाकरण में भी इतिहास दृष्टि और निश्चित आधार का उपयोग किया गया है। वे साहित्य में

सामाजिकता और साहित्यिकता, तथ्य और कलात्मक दृष्टि, इतिहास और आलोचना दोनों का अहमियत देते हैं। इसलिए उनका इतिहास आज भी अधिक उपयुक्त एवं वैज्ञानिक है। यद्यपि हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रारंभ 1000 ई. के आसपास जाता है, किंतु हिंदी साहित्य केइतिहास के प्रारंभिक काल को ठीक से समझने के लिए हमें कुछ पहले की साहित्यिक गतिविधियों का परिचय प्राप्त कर लेना चाहिए। पहले कहा जा चुका है कि इस काल में रचित अनेक अपभ्रंश रचनाओं और नाथ-सिद्धों की भाषा को पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी' ने पुरानी हिंदी कहा था। वस्तुतः पुरानी हिंदी से उनका तात्पर्य परिनिष्ठित अपभ्रंश से विकसित या अपभ्रंशोत्तर भाषा से है। सिद्धों नाथों, जैन-मुनियों के दोहे, पद्य, संदेशरासक, उक्ति-व्यक्ति प्रकरण, राउर वेल, प्राकृत पैंगलम के अनेक छंद, हेमचंद्र के छंद, हेमचंद्र के प्राकृत व्याकरण में संकलित अनेक दोहे पुरानी हिंदी के अंतर्गत हैं। पं. रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास में आदिकाल को अपभ्रंश काव्य और माना देशभाषा काव्य में विभाजित किया है और देशभाषा काव्य को 'वीरगाथा काव्य' कहा है। इस 'वीरगाथा काव्य' को पुरानी हिंदी के ही अंतर्गत मानना चाहिए। पुरानी हिंदी में अपभ्रंश और हिंदी की भाषाया एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ पुली- मिली हैं। इसीलिए आदिकाल को 'अपभ्रंश' और हिंदी का 'संधिकाल' भी कहा जाता है। हिंदी भाषा और साहित्य का स्वरूप वस्तुतः भक्तिकाल में सामने आता है।

<u>कीवर्ड्स (संकेत शब्द)-</u> आधुनिक काल, भारतेंदु युग, साहित्य, इतिहास ग्रन्थ, कालखंड, वीरगाथा काव्य

अभ्यास (अति लघु उत्तरीय मूलक प्रश्न)

प्रश्नः । सर्वप्रथम परवर्ती अपभ्रंश (उत्तर अपभ्रंश) को पुरानी हिंदी किसने कहा ?

प्रश्न. 2 काल विभाजन का मुख्य आधार क्या है?

प्रश्न 3 जनता की चित्तवृतियों का संचित प्रतिबिम्ब ही साहित्य का इतिहास कहलाता है यह किसने कहा था?

प्रश्न 4 चौरासी सिद्धों में मुख्य सिद्ध कवि कौन-कौन है?

प्रश्न 5नाथ साहित्य के आरम्भकर्ता कौन हैं?

प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)

प्रश्न. 1 हिन्दी साहित्य से आप क्या समझते है?

प्रश्न 2 हिन्दी साहित्य के लेखन पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न 3 हिन्दी साहित्य की विभिन्न लेखन पद्धतियों का वर्णन प्रस्तुत कीजिए ?

प्रश्न. 4 हिन्दी साहित्य के महटव पर दृष्टि डालिए?

प्रश्न. 5 हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथों की चर्चा प्रस्तुत कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

* हिन्दी साहित्य दर्शन डॉ आनंद नारायण शर्मा

* हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी

* हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास डॉ गणपती चंद्र गुप्त, 1956

* हिंदुई साहित्य का इतिहास - डॉ गणपती चंद्र गुप्त, 1950

BLOCK 2

काल विभाजन की आवश्यकता

UNIT-02

इकाई का स्वरूप -

उद्देश्य-

इस इकाई के दौरान आप समझ सकेंगे

- काल विभाजन के आधार को जान पाएंगे।
- नामकरण की आधार से परिचत होंगे।
- विद्वानों द्वारा दिए गए विविध मतों का अवलोकन कर सकेंगे ।

काल विभाजन की आवश्यकता

- प्रस्तावना
- हिंदी साहित्य में काल विभाजन के आधार
- काल विभाजन की आवश्यकता
- सारांश
- कीवर्ड्स (संकेत शब्द)
- अभ्यास (अति लघुउत्तरीय मूलक प्रश्न)
- प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)
- संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

इतिहासकार का सरोकार अतीत के मानव-समाज की तस्वीर की पुनर्रचना करने और समय के साथ समाज में आने वाले बदलावों का निर्देश करने से होता है। इतिहासलेखन का काम मानव-समाज के विकास के दौरान घटित परिवर्तनों को समझना, उनकी व्याख्या करना, परिवर्तनों के आपसी सम्बन्धों की संगति-असंगति पर विचार करना और नए परिवर्तनों को प्रेरित करना है। मनुष्य जिस परिवेश में जीता है उसके सन्दर्भ में उसके इतिहास की पुनर्रचना करने के लिए इतिहासकार विगत सदियों के उपलब्ध साक्ष्यों का उपयोग करता है। हालांकि यह और बात है कि अतीत से सम्बन्धित साक्ष्यों एवं तथ्यों-सूचनाओं का संग्रह करने मात्र से ही इतिहास नहीं लिखा जाता।तथ्यों का सुसंगत दृष्टिकोण से संचयन और व्याख्या करना इतिहास का काम है। इतिहास में तथ्यों की व्याख्या करने वाले दृष्टिकोण की और

व्यवस्था बनाने वाले सचयन पद्धति की आवश्यकता होती है। संचयन करने की इस पद्धति का गहरा सम्बन्ध काल विभाजन से है। जो लोग इतिहासलेखन में काल विभाजन की जरूरत नहीं समझते उनकी इस समझदारी के पीछे भी प्रायः काल विभाजन की पद्धति नहीं, बल्कि विभिन्न साहित्येतिहासों में प्रचलित काल विभाजन के ढांचे के अपूर्ण होने एवं पूरी तरह से निर्देश नहीं होने की ही बात निहित है। कालविभाजन की समस्या का जटिल होना भी एक वजह है जिसके कारण साहित्य के इतिहासलेखन पर विचार करते हुए कुछ लोग इसकी चर्चा से बचते हैं और कुछ इसे अनावश्यक बताते हुए छोड़ देने की सलाह देते हैं। इस प्रकार देखें तो काल विभाजन का इतिहास से जितना नहीं है, उतना इतिहास लेखन से है। कहना न होगा कि लेखन का अनिवार्य संबंध पाठकों से है। इतिहास के पाठकों की अपेक्षा होती है कि उसके सामने ऐतिहासिक विषय की स्पष्ट और अपेक्षाकृत सरल व्याख्या आए। इतिहास के संदर्भ में सामान्य पाठक स्पष्ट दिशानिर्देश चाहता है। जाहिर है कि यह सुनिश्चित दिशानिर्देश और कुछ नहीं बल्कि काल-विभाजन ही है। वह इतिहास जिसमें केवल वर्णन किया गया हो, निरा वृत्तांत होता है। यह वर्णन जब विश्लेषण के साथ होता है, तब इतिहास उत्पन्न होता है। इतिहास में स्वरूप की समस्या इसी कारण पैदा होती है कि उसे अतीत के अनुभव की जटिलता ही नहीं प्रस्तुत करनी होती है, उस जटिलता को कालक्रम की गति के संदर्भ में भी प्रस्तुत करना होता है। इसीलिए इतिहासकार को वर्णन और विश्लेषण के बीच, तिथिक्रम और विषयक्रम के बीच संतुलन स्थापित करना होता है। यहाँ आकर पहले तो काल विभाजन की और फिर काल विभाजन में भी कल्पनाशीलता और रचनात्मक निर्णय की जरूरत होती है। इतिहास में किसी वस्तुओं, व्यक्तियों, घटनाओं और विचारों में एक गतिशीलता, परिवर्तनशीलता और क्रमबद्धता भी दिखाई पड़ती है। यह क्रमबद्धता केवल कालानुक्रम नहीं होता, इस क्रमबद्धता में आंतरिक विकास की गति का पता चलता है। यही कारण है कि साहित्यिक प्रवृत्ति के अंत से ही दूसरी साहित्यिक प्रवृत्ति की उत्पत्ति जुड़ी होती है। इस प्रक्रिया को समझते हुए साहित्य के इतिहास में वस्तुओं, व्यक्तियों, पटनाओं और विचारों में असंगति अथवा अंतर्विरोध को पहचानना होता है। यह पहचान इसलिए भी जरूरी है क्योंकि वस्तुतः इन असंगतियों के सहारे ही एक युग में पायी जाने वाली अनेक प्रवृत्तियों का कार्य-कारण सबंध स्थापित किया जा सकता है। काल- विभाजन साहित्य के इतिहास में इस पहचान का आधार बनता है।

हिंदी साहित्य में काल विभाजन के आधार

कालविभाजन की आवश्यकता-

हिन्दी साहित्य के अध्ययन और विश्लेषण के लिए काल विभाजन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। काल विभाजन से साहित्य के विकास, प्रवृत्तियों, और परिवर्तनों को समझने में सहायता मिलती है। इसके कई प्रमुख कारण और लाभ हैं:

काल विभाजन की आवश्यकता के कारण

1. **साहित्यिक विकास का अध्ययन**:

2. काल विभाजन से साहित्यिक रचनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन संभव होता है। यह समझने में सहायता मिलती है कि साहित्य ने समय के साथ कैसे विकास किया, किन प्रवृत्तियों का उदय और पतन हुआ।

3. **सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ**:

4. साहित्य का विकास समाज और इतिहास से गहरे रूप से जुड़ा होता है। काल विभाजन से यह स्पष्ट होता है कि किस कालखंड में कौन से सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों ने साहित्य को कैसे प्रभावित किया।

5. **भाषाई परिवर्तन**:

6. विभिन्न कालों में भाषा और उसकी शैली में परिवर्तन आता है। काल विभाजन से इन परिवर्तनों का विश्लेषण करना और यह समझना आसान हो जाता है कि किस काल में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ।

7. **विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण**:

8. हर काल की अपनी विशिष्ट साहित्यिक प्रवृत्तियाँ होती हैं, जैसे भक्ति, शृंगार, राष्ट्रवाद आदि। काल विभाजन से इन प्रवृत्तियों का गहन अध्ययन और विश्लेषण संभव होता है।

9. **प्रमुख रचनाकारों और रचनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन**:

10. काल विभाजन से यह पता चलता है कि किस काल में कौन से प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ उभर कर सामने आईं। इससे साहित्यिक धारा के विकास को समझना आसान हो जाता है।

11. **साहित्यिक आलोचना और समीक्षा**:

- काल विभाजन से साहित्यिक आलोचकों और समीक्षकों को रचनाओं का विश्लेषण करने में सुविधा होती है। वे विभिन्न कालों की रचनाओं की तुलना कर सकते हैं और उनकी विशेषताओं को उजागर कर सकते हैं।

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन

हिन्दी साहित्य को सामान्यतः निम्नलिखित प्रमुख कालों में विभाजित किया जाता है:

1. **आदिकाल 1000-1400 ई.**

- यह काल वीरगाथाओं और धार्मिक साहित्य का था। भाषा में अपभ्रंश और अवहट्ट का प्रयोग हुआ।

2. **भक्तिकाल 1400-1700 ई.**

- इस काल में भक्ति आंदोलन का प्रभाव रहा। इसे निर्गुण और सगुण भक्ति में विभाजित किया जाता है। प्रमुख कवि कबीर, तुलसीदास, सूरदास, और मीरा बाई हैं।

3. **रीतिकाल 1700-1850 ई.**

- इस काल में शृंगार रस और अलंकारों का प्रयोग प्रमुख था। प्रमुख कवि बिहारी, केशवदास, और पद्माकर हैं।

4. **आधुनिक काल 1850 ई(के बाद .**:

- यह काल सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का काल है। इसे नवजागरण, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, और समकालीन साहित्य में विभाजित किया जाता है। प्रमुख रचनाकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, निराला, और अज्ञेय शामिल हैं।काल विभाजन से हिन्दी साहित्य का अध्ययन और विश्लेषण संगठित और सुगम हो जाता है। इससे साहित्य के विकास की यात्रा को समझने में मदद मिलती है और यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न समयों में साहित्य कैसे समाज और इतिहास के साथ बदलता और विकसित होता रहा है। काल विभाजन साहित्य के व्यापक और गहन अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

सारांश

इस सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा हम युग की मनोभूमि और उसके समाज के मन को परखकर उसे दूसरे युग के समाज के मन तथा उसकी मनोभूमि से अलग किया जा सकता है। भक्तिकाल से रीतिकाल तक आते-आते किस प्रकार से मनोभूमि का परिवर्तन हो चुका था, इसका विश्लेषण करने के लिए गहराई से समझने की आवश्यकता है। भक्तिकालीन कविता में प्रेम की आध्यात्मिक अनुभूति रीति कविता में स्थूल शृंगार में बदल जाती है। इस प्रकार के संधि-बिन्दु को पहचानने के बाद ही युग विभाजन को एक प्रामाणिक आधार मिलता है। साहित्य के काल निर्णय में जनता के रुचि संस्कार पर भी पर्याप्त चर्चा अपेक्षित है। युग। परिवर्तन में निर्णायक भूमिका जनरुचि की होती है। साहित्यकार समाज का अंग होने के नाते उसे अनुभव ही नहीं करता है, उसको अभिव्यंजित भी करता है। जनरुचि नये सर्जनात्मक अंकुर के लिए उर्वर भूमि तैयार करती है। इसलिए जनता की अभिरुचि और साहित्यिक परिवर्तन के संबंधों की

वास्तविकता को मानवीय आयाम से देखना उचित है।स्वयं आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास में लिखा है जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।हिन्दी साहित्य का अध्ययन और विश्लेषण अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है। इसमें साहित्य की विभिन्न विधाओं, रचनाकारों, और कालखंडों का सूक्ष्म और विस्तृत विश्लेषण शामिल होता है। यह साहित्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और भाषाई पहलुओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है।यह प्रक्रिया साहित्य के गहन और समृद्ध स्वरूप को उजागर करती है और इसे एक व्यवस्थित और संगठित रूप में प्रस्तुत करती है। हिन्दी साहित्य का यह विश्लेषण साहित्यकारों, पाठकों, और शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह साहित्यिक धरोहर को संरक्षित और सहेजने में सहायक है।

- **<u>कीवर्ड्स (संकेत शब्द)-</u> इतिहासकार, कालविभाजन, साहित्यिक, आलोचना, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक**

अभ्यास (अति लघुउत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. आचार्य रामचन्द्रशुक्ल द्वारा आधुनिककाल के विभाजन को स्पष्ट कीजिये।
2. गोरखनाथ को हिंदी का प्रथम गद्य लेखक किसने माना

प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. हिंदी साहित्य में काल विभाजन के आधारपर विचार कीजिये

2. काल विभाजन के आधारों की चर्चा कीजिये।

4. काल विभाजन की जरूरत पर विचार कीजिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं. 2007
- हिंदी साहित्य का इतिहास, सपादक डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, नोयडा, सं. 2009
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2017
- हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायण लाल प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, सं. 1958

BLOCK 3

काल विभाजन की समस्याएं

UNIT--3:

इकाई का स्वरूप -

उद्देश्य-

इस इकाई के दौरान आप समझ सकेंगे

- काल विभाजन की समस्याएंको जान पाएंगे।
- काल विभाजन के आधार को जान पाएंगे।
- विद्वानों द्वारा दिए गए विविध मतों का अवलोकन कर सकेंगे ।

काल विभाजन की समस्याएं

- प्रस्तावना
- हिंदी साहित्य का विभाजन
- हिंदी साहित्य के काल विभाजन की समस्याएं
- इतिहास लेखन में काल विभाजन की जरुरत
- सारांश
- कीवर्ड्स (संकेत शब्द)
- अभ्यास (अति लघु उत्तरीय मूलक प्रश्न)
- प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)

प्रस्तावना

कालविभाजनकी समस्याएंका विवेचन आवश्यक है। एक बात जिस पर आरंभ में ही चर्चा करना अपेक्षित है, वह यह है कि इतिहास या समाजशाथ में किसी पटना को आधार बनाकर एक रेखा खींची जा सकती है, उदाहरण के लिए इतिहास में पुनर्जागरण का आरंभ सामान्यतः तुकों के हाथों कुस्तुनतुनिया की पराजय की तिथि से माना जाता है। लेकिन साहित्य के इतिहासकार को साहित्य के रुझान का रूख पता करने में कठिनाई हो सकती है। क्योंकि साहित्य का रुझान परिवर्तन किसी एक

विधि की पटना नहीं है। यदि प्रवृत्ति को ही आधार बनाएँ तो, ऐसा देखा गया है कि जब साहित्य में एक प्रकार की प्रवृत्ति गतिशील होती है, तो उसके समानांतर कभी-कभी प्रतिरोधी प्रवृत्ति भी। गतिशील हो उठती है। इस अन्तर्विरोध के कारण काल विभाजन का पूरा ढाँचा ही चरमरा उठता है। हिंदी साहित्य का ही उदाहरण ले तो आदिकाल का उदाहरण दिया जा सकता है, जिसका विस्तृत विवेचन आगे किया जायेगा।काल विभाजन में दूसरी समस्या संक्रांति काल को लेकर होती है। सक्रमण के जिन बिंदुओं पर इतिहास के दो युगों को तोड़ा जाता है, वहाँ इतिहासधारा की चिन्तनधारा ही नहीं टूटती है बल्कि इस टूटने की प्रक्रिया में बहुत कुछ छूट भी जाता है। क्या यही कारण नहीं है कि आचार्य शुक्ल के इतिहास में संक्रांति काल के बड़े साहित्यकारों को फुटकर खाते में स्थान मिलता है, उदाहरण के लिए विद्यापर्ति, खुसरो और केशवदास का नाम गिनाया जा सकता है। संक्रांतिकाल की वास्तविकता यह होती है कि संक्राति बिंदु पर खड़े कवि के साहित्य में एक मार्ग पीछे से आता है और दूसरा रास्ता आगे से शुरू होता है। दो प्रवृत्तियों की निरंतर टकराहट उनमें मिलती है। इनमें किस प्रवृत्ति का आगे विकास होता है, इसी को ध्यान में रखा जाना आवश्यक होता है।

हिंदी साहित्य का विभाजन

साहित्येतिहास में प्रवृत्तियों के परिवर्तन को आधार बनाकर का विभाजन की परिपाटी पुरानी है। यह परिपाटी पुरानी होने पर भी सार्थक है। इससे हम उन उलझनों से बच जाते हैं, जिससे काल विभाजन के निर्णय में अराजकता की संभावना होती है। साहित्य की अन्तः प्रकृति की। एकता को समझने पर ही कालविभाग को संयोजित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हिंदी साहित्य के आदिकाल में धार्मिक, शृंगारिक और वीरगाथात्मक साहित्य का सृजन हुआ है। इन काव्यों की रचना प्रकृति की अन्तःधारा को समझकर उसे एकदूसरे से अलग कर सकते हैं।-

हिन्दी साहित्य के अब तक लिखे गए इतिहासों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखे गए हिन्दी साहित्य का इतिहास को सबसे प्रामाणिक तथा व्यवस्थित इतिहास माना जाता है। आचार्य शुक्ल जी ने इसे हिन्दी शब्दसागर भूमिका के रूप में लिखा था जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1929 ई० में प्रकाशित आंतरित कराया गया। आचार्य शुक्ल ने गहन शोध और चिन्तन के बाद हिन्दी साहित्य के पूरे इतिहास पर विहंगम दृष्टि डाली है।इतिहासऐसी क्रमिक पद्धति एकलेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- का अनुसरण करते हैं जो अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करती चलती है। विवेचन मंे तर्क का क्रमबद्ध विकास ऐसे है कि तर्क का एकदूसरे से जुड़ा हुआ-एक चरण एक-, एकदूसरे में से निकलता दिखता है। - क्षा नहीं रह जाती।आदिकाल से से अपेलेखक को अपने तर्क पर इतना गहन विश्वास है कि आवेश की उ लेकर आधुनिक काल तक आचार्य शुक्ल का इतिहास इसी प्रकार तथ्याश्रित और तर्कसम्मत रूप में चलता है। अपनी आरम्भिक उतपत्ति में आचार्य शुक्ल ने बताया है कि साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्बित होता है। इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्यपरम्परा के साथ - उनका सामंजस्य दिखाने में आचार्य शुक्ल का इतिहास और आलोचनाकर्म निहित है।इस इतिहास की -

एक बड़ी विशेषता है कि आधुनिक काल के सन्दर्भ में पहुँचकर शुक्ल जी ने यूरोपीय साहित्य का एक विस्तृत, यद्यपि कि सांकेतिक ही, परिदृश्य खड़ा किया है।

हिंदी साहित्य के काल विभाजन की समस्याएं-

कालविभाजनकी समस्याएंका विवेचन आवश्यक है। एक बात जिस पर आरंभ में ही चर्चा करना अपेक्षित है, वह यह है कि इतिहास या समाजशाथ में किसी पटना को आधार बनाकर एक रेखा खींची जा सकती है, उदाहरण के लिए इतिहास में पुनर्जागरण का आरंभ सामान्यतः तुकों के हाथों कुस्तुनतुनिया की पराजय की तिथि से माना जाता है। लेकिन साहित्य के इतिहासकार को साहित्य के रुझान का रूख पता करने में कठिनाई हो सकती है। क्योंकि साहित्य का रुझान परिवर्तन किसी एक विधि की पटना नहीं है। यदि प्रवृत्ति को ही आधार बनाएँ तो, ऐसा देखा गया है कि जब साहित्य में एक प्रकार की प्रवृत्ति गतिशील होती है, तो उसके समानांतर कभी-कभी प्रतिरोधी प्रवृत्ति भी। गतिशील हो उठती है। इस अन्तर्विरोध के कारण काल विभाजन का पूरा ढाँचा ही चरमरा उठता है। हिंदी साहित्य का ही उदाहरण ले तो आदिकाल का उदाहरण दिया जा सकता है, जिसका विस्तृत विवेचन आगे किया जायेगा।

काल विभाजन में दूसरी समस्या संक्रांति काल को लेकर होती है। सक्रमण के जिन बिंदुओं पर इतिहास के दो युगों को तोड़ा जाता है, वहाँ इतिहासधारा की चिन्तनधारा ही नहीं टूटती है बल्कि इस टूटने की प्रक्रिया में बहुत कुछ छूट भी जाता है। क्या यही कारण नहीं है कि आचार्य शुक्ल के इतिहास में संक्रांति काल के बड़े साहित्यकारों को फुटकर खाते में स्थान मिलता है, उदाहरण के लिए विद्यापर्ति, खुसरो और केशवदास का नाम गिनाया जा सकता है। संक्रांतिकाल की वास्तविकता यह होती है कि संक्राति बिंदु पर खड़े कवि के साहित्य में एक मार्ग पीछे से आता है और दूसरा रास्ता आगे से शुरू होता है। दो प्रवृत्तियों की निरंतर टकराहट उनमें मिलती है। इनमें किस प्रवृत्ति का आगे विकास होता है, इसी को ध्यान में रखा जाना आवश्यक होता है। न्दी साहित्य के काल विभाजन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण और उपयोगी होते हुए भी कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करती है। ये समस्याएँ साहित्यिक धारा के अध्ययन और विश्लेषण में जटिलताएँ उत्पन्न कर सकती हैं। यहाँ हिन्दी साहित्य के काल विभाजन की कुछ प्रमुख समस्याओं का उल्लेख किया गया है:

1. कालखंडों की स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना

- **समस्या**: हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों की सटीक सीमाएँ निर्धारित करना कठिन होता है। साहित्यिक प्रवृत्तियाँ और रचनाएँ अक्सर एक दूसरे से मेल खाती हैं और उनका एक काल से दूसरे काल में संक्रमण स्वाभाविक और क्रमिक होता है।

2. प्रमुख रचनाकारों का वर्गीकरण

- **समस्या**: कई रचनाकारों का साहित्यिक योगदान एक से अधिक कालखंडों में फैला होता है, जिससे उन्हें किसी एक विशेष कालखंड में वर्गीकृत करना चुनौतीपूर्ण होता है।

- **उदाहरण**: जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक कार्य छायावाद और उससे पहले के कालखंडों में भी महत्व रखता है, जिससे उनका वर्गीकरण जटिल हो जाता है।

3. भिन्न दृष्टिकोणों और मानदंडों का प्रभाव

- **समस्या**: काल विभाजन के मानदंड विभिन्न साहित्यिक आलोचकों और इतिहासकारों के दृष्टिकोण के अनुसार भिन्नहो सकते हैं। इससे एकरूपता और सर्वसम्मति का अभाव होता है।
- **उदाहरण**: रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा किये गए काल विभाजन में अंतर देखने को मिलता है।

4. साहित्यिक प्रवृत्तियों का बहुआयामी स्वरूप

- **समस्या**: किसी भी कालखंड में साहित्यिक प्रवृत्तियाँ एक समान नहीं होतीं। प्रत्येक काल में कई प्रवृत्तियाँ साथसाथ अस्तित्व में रहती हैं-, जिससे किसी एक प्रवृत्ति को प्रमुख मानना कठिन हो जाता है।
- **उदाहरण**: भक्तिकाल में भी निर्गुण और सगुण दो मुख्य प्रवृत्तियाँ थीं जो एक साथ विद्यमान थीं।

5. आंचलिक और स्थानीय साहित्य

- **समस्या**: हिन्दी साहित्य में विभिन्न क्षेत्रों और स्थानीय बोलियों का योगदान महत्वपूर्ण है। इन आंचलिक रचनाओं को कालखंडों में समाहित करना कठिन हो सकता है।
- **उदाहरण**: अवधी, ब्रज, भोजपुरी, और राजस्थानी साहित्य को प्रमुख हिन्दी साहित्यिक प्रवृत्तियों में कैसे शामिल किया जाए, यह समस्या उत्पन्न होती है।

6. समकालीन साहित्य की जटिलता

- **समस्या**: आधुनिक और समकालीन साहित्य में विविधता और तेजी से बदलती प्रवृत्तियाँ इसे किसी एक कालखंड में विभाजित करना कठिन बना देती हैं।
- **उदाहरण**: 1950 के बाद का साहित्य कई उपधाराओं में विभाजित है, जैसे कि प्रयोगवाद, नयी कविता, दलित साहित्य, स्त्री साहित्य आदि।

7. साहित्य और समाज के अंतर्संबंध

- **समस्या**: साहित्यिक कालखंडों का निर्धारण समाज और राजनीति के बदलावों से प्रभावित होता है। सामाजिक परिवर्तन और साहित्यिक प्रवृत्तियों के बीच का संबंध जटिल होता है।
- **उदाहरण**: स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके बाद के साहित्य को किस तरह वर्गीकृत किया जाए, यह एक चुनौती है।हिन्दी साहित्य के काल विभाजन की समस्याएँ उसके जटिल और बहुआयामी स्वरूप से उत्पन्न होती हैं। हालांकि, यह विभाजन साहित्य के अध्ययन और विश्लेषण को सुव्यवस्थित करने में सहायक होता है, लेकिन इसके अंतर्गत आने वाली चुनौतियों और समस्याओं का समाधान निकालना भी आवश्यक है। साहित्यिक प्रवृत्तियों और रचनाकारों को समझने के लिए एक लचीला और व्यापक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है ताकि हिन्दी साहित्य की समृद्ध धारा का समग्र और सही चित्रण किया जा सके। यदि इस प्रकार के विश्लेषण को स्वीकृति नहीं मिली तो यह माना जाना चाहिए कि इतिहास ने उनको स्वीकार नहीं किया।

इतिहास लेखन में काल विभाजन की जरुरत-

इतिहासकार का सरोकार अतीत के मानव-समाज की तस्वीर की पुनर्रचना करने और समय के साथ समाज में आने वाले बदलावों का निर्देश करने से होता है। इतिहासलेखन का काम मानव-समाज के विकास के दौरान घटित परिवर्तनों को समझना, उनकी व्याख्या करना, परिवर्तनों के आपसी सम्बन्धों की संगति-असंगति पर विचार करना और नए परिवर्तनों को प्रेरित करना है। मनुष्य जिस परिवेश में जीता है उसके सन्दर्भ में उसके इतिहास की पुनर्रचना करने के लिए इतिहासकार विगत सदियों के उपलब्ध साक्ष्यों का उपयोग करता है। हालांकि यह और बात है कि अतीत से सम्बन्धित साक्ष्यों एवं तथ्यों-सूचनाओं का संग्रह करने मात्र से ही इतिहास नहीं लिखा जाता। तथ्यों का सुसंगत दृष्टिकोण से संचयन और व्याख्या करना इतिहास का काम है। इतिहास में तथ्यों की व्याख्या करने वाले दृष्टिकोण की और व्यवस्था बनाने वाले सचयन-पद्धति की आवश्यकता होती है। संचयन करने की इस पद्धति का गहरा सम्बन्ध काल विभाजन से है। जो लोग इतिहासलेखन में काल विभाजन की जरूरत नहीं समझते उनकी इस समझदारी के पीछे भी प्रायः काल विभाजन की पद्धति नहीं, बल्कि विभिन्न साहित्येतिहासों में प्रचलित काल विभाजन के ढांचे के अपूर्ण होने एवं पूरी तरह से निर्देश नहीं होने की ही बात निहित है। कालविभाजन की समस्या का जटिल होना भी एक वजह है जिसके कारण साहित्य के इतिहासलेखन पर विचार करते हुए कुछ लोग इसकी चर्चा से बचते हैं और कुछ इसे अनावश्यक बताते हुए छोड़ देने की सलाह देते हैं। इस प्रकार देखें तो काल विभाजन का इतिहास से जितना नहीं है, उतना इतिहास लेखन से है। कहना न होगा कि लेखन का अनिवार्य संबंध पाठकों से है। इतिहास के पाठकों की अपेक्षा होती है कि

उसके सामने ऐतिहासिक विषय की स्पष्ट और अपेक्षाकृत सरल व्याख्या आए। इतिहास के संदर्भ में सामान्य पाठक स्पष्ट दिशानिर्देश चाहता है। जाहिर है कि यह सुनिश्चित दिशानिर्देश और कुछ नहीं बल्कि काल-विभाजन ही है। वह इतिहास जिसमें केवल वर्णन किया गया हो, निरा वृत्तांत होता है। यह वर्णन जब विश्लेषण के साथ होता है, तब इतिहास उत्पन्न होता है। इतिहास में स्वरूप कीविभाजन साहित्य के इतिहास में इस पहचान का आधार बनता है।

भारतीय हिंदी परिषद से हिंदी साहित्य का जो द्वितीय खंड प्रकाशित हुआ उसमें आदि, मध्य और आधुनिक तीनों कालों को तोड़कर 'प्राचीन' एवं 'आधुनिक' केवल दो कालों में उन्हें ग्रहण किया गया है। इस प्रकार के काल विभाजन में इतिहास की परिपक्व दृष्टि का स्पष्ट अभाव मिलता है। उसमें राजनैतिक इतिहास के स्थूल प्रतिमानों को आधार बनाया गया है। काल-विभाजन के मुख्य उपकरण, संवेदना, को पहचानने की क्षमता है। संवेदना को पहचान कर हम इतिहास की रचना करते हैं। शुक्लोत्तर इतिहास लेखन में इस बात को नजरअंदाज कर दिया गया है। इससे साहित्य के इतिहास को समझने में बाधा पड़ी है। इन इतिहासों के प्रस्तावित काल खंड से जो चित्र प्राप्त हुए हैं उसका स्वरूप ही खंडित है। उसमें इतिहास की समग्रता का प्रमाण नहीं मिलता है। नागरी प्रचारिणी सभा ने अपने "हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास" के लिए जो प्रारूप बनाया है वह आचार्य शुक्ल के इतिहास को आधार में रखकर बनाया गया है। यह उचित भी है, क्योंकि नये इतिहास को बनाने के लिए अत्यंत व्यापक दृष्टि की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि के अभाव में एक प्रामाणिक इतिहास के ढाँचे को अपनाना ही बेहतर है।

साहित्येतिहास में प्रवृत्तियों के परिवर्तन को आधार बनाकर का विभाजन की परिपाटी पुरानी है। यह परिपाटी पुरानी होने पर भी सार्थक है। इससे हम उन उलझनों से बच जाते हैं, जिससे काल विभाजन के निर्णय में अराजकता की संभावना होती है। साहित्य की अन्तः प्रकृति की। एकता को समझने पर ही कालविभाग को संयोजित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हिंदी साहित्य के आदिकाल में धार्मिक, शृंगारिक और वीरगाथात्मक साहित्य का सृजन हुआ है। इन काव्यों की रचना प्रकृति की अन्तःधारा को समझकर उसे एक-दूसरे से अलग कर सकते हैं। काल की अन्तःप्रकृति को समझने में बड़ी सूक्ष्म दृष्टि की जरूरत होती है

सारांश

हिन्दी साहित्य के इतिहास की प्राथमिक चिन्ता उसके प्रारम्भ की है। कब से हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ हुआ? दूसरे, जिस समय हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ हुआ था, उस समय हिन्दी भाषा का स्वरूप क्या था ? क्या उस समय भी हिन्दी का वही रूप था, जो आज है। अर्थात क्या हिन्दी साहित्य का इतिहास खड़ी बोली का ही इतिहास है। इस दृष्टि से यह जान लेना आवश्यक है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास सिर्फ खड़ी बोली का इतिहास नहीं है। खड़ी बोली का साहित्य तो आधुनिक काल में सन् 1870 के बाद का साहित्य माना जाता है। उससे पहले आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि का काल माना जाता है। इस काल

तक खड़ी बोली का रूप स्थिर ही नहीं हो पाया था।खड़ी बोली से पूर्व हिन्दी भाषी प्रान्तों की काव्यभाषा ब्रजभाषा थी, जिसका प्रारम्भ चौदहवीं सदी में हुआ विशेष रूप से सूरदास के काव्य से। इसके बाद उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक साहित्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा प्रतिष्ठित थी। इसके साथ-साथ अवधी, डिंगल और मैथिली में भी साहित्य रचनाएँ हो रही थीं। डिंगल (पुरानी राजस्थानी) और मैथिली में और भी पहले से काव्य रचनाएँ होने लगी थीं।इससे पूर्व पुरानी हिन्दी का काल था। अर्थात अपभ्रंश के बाद की भाषा।कुछ इतिहासकारों का मत है कि यहीं से वास्तविक हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ माना जाना चाहिए।हिन्दी साहित्य का इतिहास सन् 1000 से प्रारम्भ होकर वर्तमान काल तक सतत प्रवाहमान है। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि यह किसी मृत भाषा के साहित्य का इतिहास नहीं, जीवित भाषा के साहित्य का इतिहास है, सतत विकासशील भाषा के साहित्य का इतिहास है। इस दौरान न केवल साहित्य की भाषा में परिवर्तन हुआ, बल्कि साहित्य की विषयवस्तु में भी परिवर्तन हुआ-; कई विधाओं का उदय हुआ, कई शैलियाँ विकसित हुईं। किसी का महत्व कभी बढ़ गया, कभी कम हो गया। अतः इसे समग्रता में देखने के लिए सम्पूर्ण काल को विभाजित करके देखने की जरूरत है तथा उस काल विशेष की प्रवृत्तियों को भी समझने की जरूरत है। अलगअलग इकाइयों में हम उस कालखण्ड की विशेषताओं की - चर्चा करेंगे, परन्तु ऐसा करते हुए उसके समग्र रूप को हमेशा ध्यान में रखना होगा। तभी हम उस काल की प्रवृत्ति विशेष को समझ पाएँगे।

<u>कीवर्ड्स (संकेत शब्द)-</u> **कालविभाजन विद्यापर्ति, खुसरो, केशवदास, विभाजन, समस्या**

अभ्यास (अति लघुउत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर कौन से काल विभाजन किये गये हैं?

2. साहित्य और उसकी प्रभाव परिधि की आधार पर काल विभाजन का नामोल्लेख कीजिये।

प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. हिंदी साहित्य इतिहास को कितने भागो में बांटा गया है विवेचना कीजिये
2. हिंदी साहित्य में काल विभाजन की समस्या पर विचार कीजिये
3. नामकरण के क्या आधार हैं? उनकी चर्चा कीजिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायण लाल प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, सं. 1958
- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं. 2007
- हिंदी साहित्य का इतिहास, सपादक डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, नोयडा, सं. 2009
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2017

BLOCK 4

काल विभाजन नामकरण

UNIT-04

इकाई का स्वरूप -

उद्देश्य

इस इकाई के दौरान आप समझ सकेंगे

- काल विभाजन की पृष्टभूमि को समझ सकेंगे।
- हिन्दी साहित्य की विविध काल खंडों के नामकरण को जानना और विद्वानों द्वारा दिए गए विविध मतों का अवलोकन कर सकेंगे ।
- नामकरण के विचार संबंधी तथ्यों पर गहराई से समझन विकसित करने का लक्ष्य रहेगा।

काल विभाजन नामकरण

- प्रस्तावना
- हिन्दी साहित्य का स्वरूप
- काल विभाजन : नामकरण
- सारांश
- कीवर्ड्स (संकेत शब्द)
- अभ्यास (अति लघु उत्तरीय मूलक प्रश्न)
- प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)
- संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

साहित्य के इतिहास का काल विभाजन वस्तुतः कठिन कार्य है क्योंकि काल अखण्ड एवं निरावधी है। इसकी अविच्छिन्न धारा सर्वदा निर्बाध गति से प्रवाहित होती रहती है। साहित्य एक अविरल गतिशील

प्रक्रिया है। साहित्य समसामयिक परिस्थितियों जन जीवन की आशाओं आकांक्षाओं के परिवतर्न के साथ उपरी तौर से उसका स्वरूप परिवर्तन अवश्य होता रहता है

सांस्कृतिक चेतना भी प्रवाहमान रहती है। इसलिए वतर्मान अतीत से भिन्न प्रतीत होता हुआ भी उससे अभिन्न रूप से जुड़ा रहता है। दूसरे शब्दों में अतीत के नींव पर वतर्मान का भाव निर्मित होता है। साहित्य के दीर्घकालिन प्रवाह को यदि हम एक दृष्टि से आधन्त देख सके तो बेहतर निष्कर्ष निकल सकता है किंतु प्रवाह दर के विस्तार का बहुत सा अंश हमारी दृष्टि से ओझल भी हो सकता है इसलिए अध्ययन की सुविधा के लिए हमें इस प्रवाह को खणिडत करना पड़ता है। काल खण्डों के अपेक्षाकृत सीमित फैलाव में साहित्य की अंतनिर्हित चेतना प्रवृतियों के परिवतर्न की दिशा तथा कारणों की खोज आसानी से हो सकती है। डॉ. गणपति चंद्र गुप्त ने लिखा है कि इतिहास में हम मुख्यत. देश के स्थान पर काल का अध्ययन करते हैं अतः अध्ययन की सुव्यवस्था के लिए विभिन्न काल खण्डों में बाँट लेना सुविधा जनक एवं उपयोगी सिद्ध होता है। हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने काल विभाजन की अनिवार्यता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि शिक्षित जनता को जिन जिन प्रवृतियों के अनुसार हमारे साहित्य के स्वरूप में भी जो परिवतर्न होते आए हैं। जिन-जिन प्रवाहों की प्रेरणा से काव्यधारा की भिन्न भिन्न शाखाएँ फूटती रही है। उन सबके सम्यक् निरूपण तथा उनकी दृष्टि से किए हुए सुसंगत काल विभाजन के बिना साहित्य के इतिहास का सच्चा अध्ययन कठिन दिखाई पड़ता हैं अत. किसी वस्तु के सम्यक् अध्ययन के लिए उसे माना तत्वों खण्डों, पक्षो तथा वर्गों में विभक्त कर लेना सैधांतिक एवं व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से संगत है। बोध की सुविधा के लिए उसका कतिपय भागों, उपभागों खण्डों एवं उपखंडों में विभाजन और भूत वतर्मान एवं भविष्य के रूप में सीमा निर्धारित आदि कर लिए जाते हैं भिन्न भिन्न कालों की भिन्न भिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में परमात्मा साहित्य की अंतरिक्ष चेतना के कृति का विकास उसकी प्रवृत्तियाँ और परंपराओं के विकास तथा हास एवं दिशा परिवर्तन आदि की कहानी का सहारा स्पष्ट करना काल विभाजन का प्रधान लक्ष्य है।

हिन्दी साहित्य का स्वरूप-

काल विभाजन के प्रमुख आधार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काल विभाजन में जनता की बदलती हुई चितवृत्तियो के तहत विशेष प्रकार की रचनाओं की प्रचुरता एवं परामाणिकता तथा उनमें पाई जाने प्रवृत्तियों एवं ग्रंथों की प्रसिद्धि को आधार माना है। उन्होंने ने लिखा है कि जिस काल खण्ड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पड़ीं है वह एक अलग काल माना गया है और उसका नामकरण उन्ही रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया गया है। दुसरी बात है गंरथो की प्रसिद्ध किसी काल के भीतर जिसे एक ही ढंग के बहुत अधिक गंरथो परसिद्ध चले आते है। उस ढंग की रचना उस

काल के लक्षण के अन्तर्गत मानी जाएगी चाहे और दुसरे ढंग की अपरिहार्य और साधारण कोटि की बहुत सी पुस्तकें भी इधर उधर कोनों में पड़ी मिल जाया करती है। प्रसिद्ध भी है कि किसी काल की लोक परवृत्ति की परतिध्वनि है सारा यह है कि इन दोनों बातों कि और ध्यान देकर काल विभागों का नामकरण किया गया है प्रथम संस्करण का वक्तव्य डॉ. राम कुमार वर्मा ने काल विभाजन के लिए राजनैतिक परिवर्तन को आधार माना है जबकि आचार्य नलिन विलोच शरमा का विचार है कि यदि हम यह मानते हैं कि मनुष्य के राजनैतिक सामाजिक बौद्धिक या भाषा वैज्ञानिक विकास से संयुक्त रहते हुए साहित्य का स्वतंत्र विकास होता है और दूसरा पहले का निष्क्रिय प्रतिबिंबित नहीं है तो हम अनिवार्यतः इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि साहित्यक युग विशुद्ध साहित्यक मानदण्ड के सहारे निर्धारित होने चाहिए।

डॉ गणपति चन्द्र गुप्त ने विशुद्ध साहित्यक प्रवृतियों तथा समाज की विभिन्न परिस्थितियों के काल विभाजन के प्रमुख दो आधारो के रूप में स्वीकार किया है। डॉ रामखेलावन पाण्डेय का निष्कर्ष है कि पत्रकार काल में समस्त काल खण्ड युग संघी का संकट बोल उपस्थित करता है। इसी दृष्टि से उन्होंने साहित्य के इतिहास का काल विभाजन किया है।

हिन्दी साहित्य का स्वरूप अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है, जिसमें विभिन्न कालखंडों, भाषाई शैलियों, साहित्यिक विधाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश है। यह साहित्यिक धारा अपनी प्राचीनता से लेकर आधुनिकता तक की यात्रा में समाज, धर्म, राजनीति और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है। यहाँ हिन्दी साहित्य के स्वरूप का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है:

1. कालखंडों के आधार पर हिन्दी साहित्य का स्वरूप

आदिकाल विशेषताएँ: वीरगाथा साहित्य, धार्मिक और नैतिक शिक्षा पर आधारित रचनाएँ।

- **भाषा**: अपभ्रंश और अवहट्ट।
- **प्रमुख रचनाएँ**: "पृथ्वीराज रासो" (चंदबरदाई), "परमाल रासो" (जगनिक)।

भक्तिकाल विशेषताएँ: भक्ति भावना, ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण।

- **भाषा**: ब्रज, अवधी, बुंदेली।
- **प्रमुख रचनाएँ**:
- **निर्गुण भक्ति**: कबीरदास, रैदास।

- **सगुण भक्ति**: तुलसीदास (रामचरितमानस), सूरदास (सूरसागर), मीराबाई।

रीतिकाल विशेषताएँ: शृंगारिकता, अलंकारिकता, नायिका भेद, रस।

- **भाषा**: ब्रज।
- **प्रमुख रचनाएँ**: बिहारी (बिहारी सतसई), केशवदास (रसिकप्रिया), पद्माकर (जगतविनोद)।

आधुनिक काल (1850 ई. के बाद)विशेषताएँ:

सामाजिक जागरूकता, राष्ट्रवाद, आधुनिकता, व्यक्तिवाद।

- **भाषा**: खड़ी बोली।
- **प्रमुख रचनाएँ**:
- **भारतेंदु युग**: भारतेंदु हरिश्चंद्र (अंधेर नगरी), बालकृष्ण भट्ट।
- **द्विवेदी युग**: महावीर प्रसाद द्विवेदी (सरस्वती पत्रिका)।
- **छायावाद**: जयशंकर प्रसाद (कामायनी), सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा।
- **प्रगतिवाद**: नागार्जुन, त्रिलोचन, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'।
- **समकालीन साहित्य**: मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन), धर्मवीर भारती (गुनाहों का देवता), निर्मल वर्मा।

2. साहित्यिक विधाओं के आधार पर हिन्दी साहित्य का स्वरूप

कविताविशेषताएँ: विभिन्न कालखंडों में विभिन्न प्रवृत्तियाँ, जैसे कि भक्ति, शृंगार, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद।

- **प्रमुख कवि**: कबीर, तुलसीदास, सूरदास, बिहारी, जयशंकर प्रसाद, निराला, नागार्जुन, धूमिल।

कहानीविशेषताएँ: समाज की समस्याओं, व्यक्तिगत संवेदनाओं, और सामाजिक सुधार की कहानियाँ।

- **प्रमुख लेखक**: प्रेमचंद (गोदान), जयशंकर प्रसाद (आकाशदीप), यशपाल, भीष्म साहनी, मंटो।

उपन्यासविशेषताएँ: सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों का चित्रण, व्यक्तिवाद, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

- **प्रमुख लेखक**: प्रेमचंद (गोदान), यशपाल (झूठा सच), रेणु (मैला आंचल), निर्मल वर्मा (लाल टीन की छत), मृदुला गर्ग।

नाटकविशेषताएँ: सामाजिक मुद्दों, ऐतिहासिक घटनाओं, और मानवीय संवेदनाओं का मंचन।

- **प्रमुख नाटककार**: भारतेंदु हरिश्चंद्र (अंधेर नगरी), जयशंकर प्रसाद (स्कंदगुप्त), मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन), धर्मवीर भारती (अंधा युग)।

निबंध और आलोचनाविशेषताएँ: साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श।

- **प्रमुख लेखक**: रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, डॉ. नगेन्द्र।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर हिन्दी साहित्य का स्वरूप

भक्ति आंदोलनविशेषताएँ: धार्मिक सुधार, सामाजिक समानता, व्यक्तिगत भक्ति।

- **प्रमुख कवि**: कबीर, रैदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई।

स्वतंत्रता संग्रामविशेषताएँ: राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता की भावना, सामाजिक सुधार।

- **प्रमुख लेखक**: प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान।

आधुनिकता और उत्तर आधुनिकताविशेषताएँ: आधुनिकता की खोज, व्यक्तिवाद, सांस्कृतिक विविधता, स्त्री विमर्श, दलित साहित्य।

- **प्रमुख लेखक**: निर्मल वर्मा, मृदुला गर्ग, विमल मित्र, भीमबेटका।

हिन्दी साहित्य का स्वरूप अत्यंत विस्तृत और विविधतापूर्ण है, जिसमें विभिन्न कालखंडों, साहित्यिक विधाओं, और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का गहन समावेश है। इसका अध्ययन और विश्लेषण साहित्य की समृद्ध धारा और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिन्दी साहित्य की इस व्यापकता और विविधता को समझने के लिए एक व्यवस्थित और सूक्ष्म दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

काल विभाजन : नामकरण

डॉ. शम्भू नाथ सिंह ने इतिहास और समाज शास्त्रीय युग के समानांतर साहित्यक युगों की अवधारणा परन्तु की है समग्रतः काल विभाजन में निम्नलिखित प्रयुक्त हुए हैं-

क.ऐतिहासिक कालक्रम

ख.शासक तथा उसके शासन काल

ग. जननायक तथा साहित्यक नेता

घ.सांस्कृतिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय आदोंलन तथा परिवर्तन

साहित्यिक प्रवृत्ति काल विभाजन की परंपरा हिंदी साहित्य के प्रारंभिक दो इतिहासकारों गार्स-द- तासी और शिव सिंह सेंगर ने काल विभाजन का प्रयास नहीं किया सर्वप्रथम डॉ जार्ज जियर्सन ने इस दिशा में प्रयास किया। डॉ ग्रियर्सन का इतिहास ग्रंथ अध्यायो में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय सामान्यतया एक काल का सूचक है भारतीय भाषा काव्य के स्वर्णयुग 16 वी. एवं 17 वी. शदी पर मलिक मुहम्मद की प्रेम कविता से प्रारंभ करने ब्रज के कृष्ण भक्त कवियों तुलसीदास के ग्रंथों और केशव दास द्वारा स्थापित कवियों के रीति सम्प्रदाय को सम्मलित करके कुल छ. अध्याय है जो। पूर्णतया समय के दृष्टि से नहीं विभक्त किए गए हैं बल्कि कवियों के विशेष वर्गों की दृष्टि से बने हैं। प्रत्येक काल के अंत में परिशिष्ट दिया गया है। जिसमें उस युग अथवा उस वर्गों के छोटे कवियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

आदि प्रकरण (आदिकाल से सं. 1560 वि.)

(क) हिंदी की उत्पत्ति और काव्य लक्षण (वैदिक समय से से.700)

(ख) पूर्व प्रारम्भिक हिंदी चंद पूर्व (सं.700_1200)

(ग) पूर्व प्रारंभिक हिंदी शाखों काव्य (सं. 1203_1347)

(घ) उत्तर प्रारंभिक हिंदी (सं.1348_1444)

(ड.) पूर्व माध्यमिक हिंदी (सं॰ 1445_1560) प्रौढ़ माध्यमिक प्रकरण (सं॰1561_1680)

(च) पूर्व माध्यमिक हिंदी अस्हछाप (सं. 1561_1630)

(छ) प्रौढ़ माध्यमिक हिंदी सौर काल (सं. 1561_1630)

(ज) गोस्वामी तुलसीदास और तुलसीदास की हिंदी (सं. 1631_1645)

(डा) प्रौढ़ माध्यमिक हिंदी तुलसी काल (सं. 1646_1670)

(ट) प्रौढ़ माध्यमिक हिंदी_अंतिम तुलसीदास (सं॰ 1671_1680)

(क) पूर्वलकृत हिदी

(ख) सेनापति काल (सं.1681_1706)

(ग) बिहारी काल (सं.1707_1720)
(घ) भूषण काल (सं॰1721_1750)

(ड.) आदिम देव काल (सं॰1751_1771)

(च) माध्यमिक देव काल (सं॰1772_1790)

उत्तरालकृत प्रकरण (क) उत्तरालंकृत हिंदी (सं. 1791_1889)

(ख) दास काल (सं॰1791_1810)

(ग) सूदन काल (सं॰1811_1855)

(घ) बेनी प्राचीन काल

(ड.) पधाकर काल (सं०1856_1875)

(क) अज्ञात काल

(ख) परिवर्तन कालिक हिंदी (सं०1890_1925)

(ग) दिद्धदेव काल (सं०1890_1925)

(घ) वर्तमान हिंदी पज_पजिकाऐ (सं०1926_1945)

(ड.) पूर्व हरिशचंद्र काल (सं०1945_1966)

(च) उत्तर हरिशचंद्र काल

(छ) परम प्राचीन कविगण (आदि से सं. 1944 पर्यन्त शेष)

(ज) दूसरा अज्ञात कालीन प्रकरण

(झ) पूर्व नूतन परिपाटी (सं. 1945_1960)

(ट) उत्तर नूतन परिपाटी (सं.1961_1975)

(ठ) वर्तमान काल (सं. 1976)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल काल विभाजन और नामकरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने पूर्ववर्ती साहित्यकारों द्वारा किए गए वर्गीकरण की समीक्षा करते हुए अपने हिंदी साहित्य का इतिहास (1929ई.) में 900 वर्ष के इतिहास को चार कालो में विभाजित किया है-

(क) आदिकाल (वीरगाथा काल सं. 1050_1375)

(ख) पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल सं. 1375_1700)

(ग) उत्तर मध्य काल (रीति काल, सं. 1700_1900)

(घ) आधुनिक काल (गध काल सं. 1900_1984)

शुक्ल जी का काल विभाजन वैज्ञानिक एवं सटीक है बहुत उछल कुद मचाकर भी परवर्ती विद्धानों ने इसी की पुनरावृत्ति की है उन्होंने न विभाजन के दो आधारों ग्रंथों की प्रसिद्धि एवं प्रामाणिकता एवं उसमें पाई जाने वाली प्रवृत्तियों को एक साथ ग्रहण किया है। शुक्ल जी कालों का दोहरा नामकरण किया है एक कोष्ठक के बाहर जो समय काल बोधक है इससे हिंदी साहित्य के पाठकों को साहित्य का बोध आसानी से हो जाता है आदिकाल को उन्होंने वीरगाथा काल इसलिए कहा कि आदिकाल में प्राप्त 12 प्रमाणिक रचनाओं में 7 वीरगाथात्मक है

डॉ. नगेन्द्र प्रमुख रहे हैं उनके द्वारा सम्पादित हिंदी साहित्य का इतिहास एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है उन्होंने आचार्य शुक्ल के नामकरण को यथावत स्वीकार करते हुए आधुनिक काल में कतिपय परिवर्तन किया है।

(1) आदि काल 7 वीं शती 14 वीं शती

(2) शक्ति काल 14 वीं शती 17 वीं शती

(3) रीति काल 17 वीं शती 19 वीं शती

(4) आधुनिक काल_19 वीं शती के मध्य से अब तक

(क) पुनर्जागरण काल (भारतेंदु युग)_1857_1900ई.

(ख) जागरण सुधार काल (द्विवेदी युग)_1900_1918ई

(ग) छाया वाद काल (1918_1938ई. (घ) छाया वादों काल

(1) प्रगति प्रयोग काल_1938_1953ई.(2) नवलेखन काल 1953 अब तक

निष्कर्ष डॉ. नगेन्द्र द्वारा किया गया नामकरण प्रायः सबको स्विकार्य है क्योंकि कि यह शुक्ल जी के नामकरण का ही नवोन्मेष है इस प्रकार साहित्यतिहास के काल विभाजन तथा नामकरण के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न मतों एवं प्रयासों के बाद निष्कर्ष यह निकलता है कि कोई भी नाम एकदम पूर्ण एवं उपयुक्त नहीं है कुछ नामकरण तो सर्वथा भ्रामक है सफलता सुबोधता और व्यापति की दृष्टि से आचार्य शुक्ल के द्वारा किया गया काल विभाजन सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होता है क्योंकि परवर्ती सभी इतिहासकारों ने किसी न किसी रूपों में शुक्ल द्वारा किए गए नामकरण एवं विभाजन पर अपनी सहमति जताई है उनकी असहमति के केंद्र में भी आचार्य शुक्ल ही है अतः दन्किंचित संशोधन के साथ इसे स्वीकार करना समीचीन होगा।

सारांश

इतिहास-लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक ऐसी क्रमिक पद्धति का अनुसरण करते हैं जो अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करती चलती है। विवेचन में तर्क का क्रमबद्ध विकास ऐसे है कि तर्क का एक-एक चरण एक-दूसरे से जुड़ा हुआ, एक-दूसरे में से निकलता दिखता है। लेखक को अपने तर्क पर इतना गहन विश्वास है कि आवेश की उसे अपेक्षा नहीं रह जाती।आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक आचार्य शुक्ल का इतिहास इसी प्रकार तथ्याश्रित और तर्कसम्मत रूप में चलता है। अपनी आरम्भिक उत्पति में आचार्य शुक्ल ने बताया है कि साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्बित होता है। इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य-परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाने में आचार्य शुक्ल का इतिहास और आलोचना-कर्म निहित है।इस इतिहास की एक बड़ी विशेषता है कि आधुनिक काल

के सन्दर्भ में पहुँचकर शुक्ल जी ने यूरोपीय साहित्य का एक विस्तृत, यद्यपि कि सांकेतिक ही, परिदृश्य खड़ा किया है। इससे उनके ऐतिहासिक विवेचन में स्रोत, सम्पर्क और प्रभावों की समझ स्पष्टतर होती है।

- **<u>कीवर्ड्स (संकेत शब्द)-</u> सांस्कृतिक, चेतना, वतर्मान, अतीत, साहित्य, अध्ययन, कालखण्ड**

अभ्यास (अति लघु उत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. रामचन्द्र शुक्ल के द्वारा आदिकाल का नामकरण क्या किया गया ?

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी के द्वारा हिन्दी साहित्य के आरंभिक काल को क्या कहा है?

3. जागरण सुधार काल के नाम से कौन युग जाना जाता है

4. रामचन्द्र शुक्ल द्वारा विरचित पुस्तक का नाम क्या है?

प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. हिन्दी साहित्य के नामकरण और काल खंडों के उपक्रम पर प्रकाश डालें ?

2. नामकरण के विविड आयामों पर प्रकाश डालें ?

3. हिन्दी साहित्य के कालखंडों और नामकरण पर एक आलोचनात्मकन दीर्घउत्तरदें?

संदर्भग्रंथसूची

- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपतिचंद गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद सं. 2007
- हिंदी साहित्य का अतीत, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019
- हिंदी साहित्य की उद्भव और विकास, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2020

BLOCK 5

काल विभाजन की पृष्ठभूमि

UNIT-05:

इकाई की रूपरेखाः

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- काल विभाजन की पृष्ठभूमि को समझ को सकेंगे।
- काल विभाजन और नामकरण के संदर्भ में आने वाली कठिनाइयों से परिचित हो सकेंगे।
- काल विभाजन और नामकरण के उन आधारों को समझ सकेंगे।
- जिन आधारों पर साहित्य के इतिहास में काल विभाजन और नामकरण किया जाता है।
- हिन्दी साहित्य में प्रचलित काल विभाजन और नामकरण की चर्चा कर सकेंगे।

1. प्रस्तावना
2. हिंदी साहित्य में काल विभाजन के प्रयास
3. आदिकालः काल विभाजन और नामकरण
4. भक्तिकालः की पृष्ठभूमि
5. रीतिकाल की पृष्ठभूमि
6. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि
7. भारतेंदु युगः काल विभाजन और नामकरण
8. द्विवेदी युग
9. छायावाद
10. छायावादोत्तर

11. सारांश
12. कीवर्ड्स (संकेत शब्द)-
13. अभ्यास (अति लघुउत्तरीय मूलक प्रश्न)
14. प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)
15. संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तब हमारी पहली समस्या होती है कि 1000 वर्षों के इतिहास को कैसे पढ़ा जाय? इसी समस्या को ध्यान में रखकर इतिहास को कालखंडों में विभाजित करते हैं। लेकिन इससे हमारे प्रश्न का समाधान नहीं होता। इसी से जुड़ा एक दूसरा प्रश्न उठ खड़ा होता है। साहित्य के इतिहास में काल विभाजन और नामकरण की अनिवार्यता क्या है? इस अनिवार्यता को इतिहास में किन तथ्यों से पुष्ट किया जाता है? इतिहास का कोई कालखंड या युग इतिहास की तथ्यपूर्ण वास्तविकता को प्रतिबिंबित करता है, अथवा वह इतिहासकार के मन की संकल्पना है। क्या युग की पहचान इतिहासकार की व्याख्या है? इन सारे प्रश्नों का समाधान ढूंढना आवश्यक है। इन प्रश्नों से टकराये बिना इतिहास का सही विभाजन नहीं हो सकता। और उसके बिना हम काल विभाजन के आधारों को नहीं समझ सकते।

यदि युग विभाजन इतिहास की केवल पद्धतिगत अनिवार्यता है तो उसका औचित्य इतिहास बोध की वास्तविकता से ही निर्धारित हो सकता है। इतिहास बोध में एक प्रकार की आलोचनात्मक चेतना होती है। एक ऐसी चेतना जिसका उपयोग हम जीवन और संस्कृति के परीक्षण के लिए करते हैं। जिसकी कसौटी पर साहित्य और समाज के रिश्ते की पहचान की जाती है। साहित्य का इतिहासकार इन रिश्तों में आये परिवर्तन को जितनी तीव्रता से अनुभव करेगा, उसका कालविभाजन उतना ही प्रामाणिक होगा। क्या यही कारण नहीं है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास की ओर बार-बार लौटने की जरूरत होती है। उनके इतिहास की ओर हम इसलिए लौटते हैं क्योंकि उन्होंने अपनी प्रखर आलोचनात्मक दृष्टि से इतिहास बोध को अर्जित किया था। उन्होंने साहित्य के इतिहास को कार्य-कारण के संबंधों की श्रृंखला में प्राप्त किया था।

हिदी साहित्य में प्रचलित काल विभाजन

जार्ज ग्रियर्सन का काल विभाजन

1. चारण-काल 1702-1300 ई.)

2. पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण

3. जायसी की प्रेम कविता

4. ब्रज का कृष्ण-सम्प्रदाय

5. मुगल दरबार

6. तुलसीदास

7. रीति काव्य

8. तुलसीदास के अन्य परवर्ती

9. अट्ठारहवीं शताब्दी

10. कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान और

11. महारानी व्हिक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान।

डॉ. जार्ज ग्रियर्सन के विभाजन में अनेक असंगतियाँ, न्यूनता एवं त्रुटियाँ होते हुए भी प्रथम प्रयास होने के कारण इसका अपना महत्व है। आगे चलकर मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्र बन्धु-विनोद' (1913) में काल-विभाजन का नया प्रयास किया जो प्रत्येक दृष्टि से जार्ज ग्रियर्सन के प्रयास से बहुत अधिक प्रौढ़ एवं विकसित कहा जा सकता

डॉ. रामकुमार वर्मा का काल विभाजन

शुक्लजी के पश्चात् डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम इस प्रसंग में उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपना नया कालविभाजन प्रस्तुत किया जो इसप्रकार है-

1. सन्धिकाल (750-100 वि.)

2. चारण काल (1000-1375 वि.)

3. भक्तिकाल (1375-1700 वि.)

4. रीतिकाल (1700-1900 वि.)

5. आधुनिक काल (1900 से अब तक)

डॉ. वर्मा के विभाजन के अंतिम तीन काल-विभाजन आचार्य शुक्लजी के ही विभाजन के अनुरूप है, केवल 'वीरगाथाकाल' के स्थान पर 'चारणकाल' एवं 'सन्धिकाल' नाम देकर अपना नयापण स्थापित किया है। इस परम्परा में बाबू श्यामसुन्दर दास द्वारा किया हुआ काल-विभाजन भी उल्लेखनीय है। उनके काल-विभाजन में आ. शुक्लजी से कोई अधिक भिन्नता नहीं है। उनका काल-विभाजन इस प्रकार है-

बाबू श्यामसुन्दर दास का काल-विभाजन

1. आदिकाल (वीरगाथा का युग संवत् 1000 से संवत् 1400 तक)

2. पूर्व मध्ययुग (भक्ति का युग, संवत् 1400 से संवत् 1700 तक)

3. उत्तर मध्ययुग (रीति ग्रन्थों का युग, संवत् 1700 से, संवत् 1900 तक)

4. आधुनिक युग (नवीन विकास का युग, संवत् 1900 से अब तक)

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त का काल-विभाजन

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने अपने ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में उसका अनुमोदन किया है। उनका

काल-विभाजन इस प्रकार है-

1. प्रारम्भिक काल (1184-1350 ई.)

2. पूर्व मध्यकाल (1350-1600 $.)

3. उत्तर मध्यकाल (1600-1857.)

4. आधुनिक काल (1857 ई. अब तक)

डॉ. नगेन्द्र का काल-विभाजन

इस परम्परा में डॉ. नगेन्द्र का नाम भी उल्लेखनीय है। उन्होंने हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन तथा नामकरण इस

प्रकार किया है-

1. आदिकाल-7वीं शती के मध्य से 14 वीं शती के मध्य तक।

2. भक्तिकाल 14वीं शती के मध्य से 17 वीं शती के मध्य तक।

3. रीतिकाल- 17 वीं शती के मध्य से 19 वीं शती के मध्य तक।

4. आधुनिक काल 19वीं शती के मध्य से अब तक।

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) सं. 1877-1900 ई.

2. जागरण-सुधार काल (द्विवेदी काल) सं. 1900-1918 ई.

3. छायावाद काल सं. 1918-1938 ई.

4. छायावादोत्तर काल

(क) प्रगति-प्रयोग काल- सं. 1938-1953 ई.

(ख) नवलेखन काल सं. 1953 में अब तक।

आदिकालः काल विभाजन और नामकरण

हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रथम काल का नामकरण विद्वानों ने इस प्रकार किया है-

1. वीरगाथा काल: (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)
2. चारणकाल: (डॉ॰ ग्रियर्सन, रामकुमार वर्मा)
3. वीरकाल: (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)
4. सिद्ध सामंत युग: (राहुल संकृत्यायन)
5. बीजवपन काल: (महावीर प्रसाद द्विवेदी)
6. आरम्भिक काल: (मिश्रबंधु)
7. आदिकाल: (हजारी प्रसाद द्विवेदी)
8. अंकुरणकाल: (गोलेन्द्र पटेल)

ये सभी नाम वस्तुत: एक ही सत्य को कई रूपों में परखने की विविध चेष्टाये हैं। जिन्होंने काव्य के प्रमुख गुणों को ध्यान में रखा, उन्होंने वीरगाथा; जिन्होंने कवि को प्रधान समझा, उन्होंने चारण; जिन्होंने काव्य-विषय आश्रयदाता को प्रधान माना, उन्होंने सामन्त तथा जिन्होंने साहित्य की प्राचीनता को ध्यान में रखा, उन्होंने पुर्व प्रारम्भ तथा आदिकाल नाम रखे

भक्तिकालकी पृष्ठभूमि

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति काल महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आदिकाल के बाद आये इस युग को 'पूर्व मध्यकाल' भी कहा जाता है। इसकी समयावधि 1375वि से.स.1700विजाती है। तक की मानी.स. यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ युग है जिसको जॉर्ज ग्रियर्सन ने स्वर्णकाल, श्यामसुन्दर दास ने स्वर्णयुग, आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने भक्ति काल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण कहा। सम्पूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि और उत्तम रचनाएं इसी में प्राप्त होती हैं। दक्षिण में आलवार बंधु नाम से कई प्रख्यात भक्त हुए हैं। इनमें से कई तथाकथित नीची जातियों के भी थे। वे बहुत पढेलिखे नहीं थे-, परंतु अनुभवी थे। आलवारों के पश्चात दक्षिण में आचार्यों की एक परंपरा चली जिसमें रामानुजाचार्य प्रमुख थे। रामानुजाचार्य की परंपरा में रामानंद हुए। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। 13वीं सदी तक धर्म के क्षेत्र में बड़ी अस्तव्यस्तता आ गई। जनता में सिद्धों और योगियों आदि द्वारा प्रचलित अंधविश्वास फैल रहे थे, संपन्न वर्ग में भी रूढ़ियों और आडंबर की प्रधानता हो चली थी। मायावाद के प्रभाव से लोकविमुखता और निष्क्रियता के भाव समाज में पनपने लगे थे। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन के रूप में ऐसा भारतव्यापी विशाल सांस्कृतिक आंदोलन उठा जिसने समाज में उत्कर्षविधायक सामाजिक और वैयक्तिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की।भक्ति आंदोलन का आरंभ दक्षिण के आलवार संतों द्वारा 10वीं सदी के लगभग हुआ। वहाँ शंकराचार्य के अद्वैतमत और मायावाद के विरोध में चार वैष्णव संप्रदाय खड़े हुए। इन चारों संप्रदायों ने उत्तर भारत में विष्णु के अवतारों का प्रचारप्रसार किया। इनमें से एक के प्रवर्तक -

रामानुजाचार्य थे, जिनकी शिष्यपरंपरा में आनेवाले रामानंद ने उत्तर भारत में रामभक्ति का (पंद्रहवीं सदी) किया। रामानंद के राम ब्रह्म के स्थानापन्न थे जो राक्षसों का विनाश और अपनी लीला का प्रचार विस्तार करने के लिए संसार में अवतीर्ण होते हैं। भक्ति के क्षेत्र में रामानंद ने ऊँचनीच का भेदभाव मिटाने पर विशेष बल दिया। राम के सगुण और निर्गुण दो रूपों को माननेवाले दो भक्तों कबीर और - तुलसी को इन्होंने प्रभावित किया। विष्णुस्वामी के शुद्धाद्वैत मत का आधार लेकर इसी समय बल्लभाचार्य ने अपना पुष्टिमार्ग चलाया। बारहवीं से सोलहवीं सदी तक पूरे देश में पुराणसम्मत कृष्णचरित् के आधार पर कई संप्रदाय प्रतिष्ठित हुए, जिनमें सबसे ज्यादा प्रभावशाली वल्लभ का पुष्टिमार्ग था। उन्होंने शांकर मत के विरुद्ध ब्रह्म के सगुण रूप को ही वास्तविक कहा। उनके मत से यह संसार मिथ्या या माया का प्रसार नहीं है बल्कि ब्रह्म का ही प्रसार है, अतसत्य है। उन्होंने कृष्ण : के लिए भक्त का पूर्ण आत्मसमर्पण आवश्यक बतलाया। को ब्रह्म का अवतार माना और उसकी प्राप्ति के अनुग्रह या पुष्टि के द्वारा ही भक्ति सुलभ हो सकती है। इस संप्रदाय में उपासना के लिए भगवान् गोपीजनवल्लभ, लीलापुरुषोत्तम कृष्ण का मधुर रूप स्वीकृत हुआ। इस प्रकार उत्तर भारत में विष्णु के राम और कृष्ण अवतारों की प्रतिष्ठा हुई।इस प्रकार इन विभिन्न मतों का आधार लेकर हिंदी में निर्गुण और सगुण के नाम से भक्तिकाव्य की दो शाखाएँ साथ साथ चलीं। निर्गुणमत के दो उपविभाग हुए - के जायसी हैं। सगुणमत भी दो उपधाराओं ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी। पहले के प्रतिनिधि कबीर और दूसरे रामभक्ति और कृष्णभक्ति। पहले के प्रतिनिधि तुलसी हैं और दूसरे के - में प्रवाहित हुआ सूरदास।भक्तिकाव्य की इन विभिन्न प्रणलियों की अपनी अलग अलग विशेषताएँ हैं पर कुछ आधारभूत बातों का सन्निवेश सब में है। प्रेम की सामान्य भूमिका सभी ने स्वीकार की। भक्तिभाव के स्तर पर मनुष्यमात्र की समानता सबको मान्य है। प्रेम और करुणा से युक्त अवतार की कल्पना तो सगुण भक्तों का आधार ही है पर निर्गुणोपासक कबीर भी अने राम को प्रिय, पिता और स्वामी आदि के रूप में स्मरण करते हैं। ज्ञान की तुलना में सभी भक्तों ने भक्तिभाव को गौरव दिया है। सभी भक्त कवियों ने लोकभाषा का माध्यम स्वीकार किया है।

ज्ञानश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीर पर तात्कालिक विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियों और दार्शनिक मतों का सम्मिलित प्रभाव है। उनकी रचनाओं में धर्मसुधारक और समाजसुधारक का रूप विशेष प्रखर है। उन्होंने आचरण की शुद्धता पर बल दिया। बाह्याडंबर, रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर उन्होंने तीव्र कशाघात किया। मनुष्य की क्षमता का उद्घोष कर उन्होंने निम्नश्रेणी की जनता में आत्मगौरव का भाव जगाया। इस शाखा के अन्य कवि रैदास, दादू हैं।

अपनी व्यक्तिगत धार्मिक अनुभूति और सामाजिक आलोचना द्वारा कबीर आदि संतों ने जनता को विचार के स्तर पर प्रभावित किया था। सूफी संतों ने अपने प्रेमाख्यानों द्वारा लोकमानस को भावना के स्तर पर प्रभावित करने का प्रयत्न किया। ज्ञानमार्गी संत कवियों की वाणी मुक्तकबद्ध है, प्रेममार्गी कवियों की प्रेमभावना लोकप्रचलित आख्यानों का आधार लेकर प्रबंधकाव्य के रूप में ख्पायित हुई है।

सूफी ईश्वर को अनंत प्रेम और सौंदर्य का भंडार मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर को जीव प्रेम के मार्ग से ही उपलब्ध कर सकता है। साधाना के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को वह गुरु या पीर की सहायता से साहसपूर्वक पार करके अपने परमप्रिय का साक्षात्कार करता है। सूफियों ने चाहे अपने मत के प्रचार के लिए अपने कथाकाव्य की रचना की हो पर साहित्यिक दृष्टि से उनका मूल्य इसलिए है कि उसमें प्रेम और उससे प्रेरित अन्य संवेगों की व्यंजना सहजबोध्य लौकिक भूमि पर हुई है। उनके द्वारा व्यंजित प्रेम ईश्वरोन्मुख है पर सामान्यतयह प्रेम लौकिक भूमि पर ही संक्रमण करता है। परमप्रिय के सौंदर्य :, प्रेमक्रीड़ा और प्रेमी के विरहोद्वेग आदि का वर्णन उन्होंने इतनी तन्मयता से किया है और उनके काव्य का मानवीय आधार इतना पुष्ट है कि आध्यात्मिक प्रतीकों और रूपकों के बावजूद उनकी रचनाएँ प्रेमसमर्पित कथाकाव्य की श्रेष्ठ कृतियाँ बन गई हैं। उनके काव्य का पूरा वातावरण लोकजीवन का और गार्हस्थिक है। प्रेमाख्यानकों की शैली फारसी के मसनवी काव्य जैसी है।

इस धारा के सर्वप्रमुख कवि जायसी हैं जिनका पदमावत"' अपनी मार्मिक प्रेमव्यंजना, कथारस और सहज कलाविन्यास के कारण विशेष प्रशंसित हुआ है। इनकी अन्य रचनाओं में अखरावट"' और आखिरी " कलाम' आदि हैं, जिनमें सूफी संप्रदायसंगत बातें हैं१ इस धारा के अन्य कवि हैं कुतबन, मंझन, उसमान, शेख, नबी और नूरमुहम्मद आदि।

ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों में विचार की प्रधानता है तो सूफियों की रचनाओं में प्रेम का एकांतिक रूप व्यक्त हुआ है। सगुण धारा के कवियों ने विचारात्मक शुष्कता और प्रेम की एकांगिता दूरकर जीवन के सहज उल्लासमय और व्यापक रूप की प्रतिष्ठा की। कृष्णभक्तिशाखा के कवियों ने आनंदस्वरूप लीलापुरुषोत्तम कृष्ण के मधुर रूप की प्रतिष्ठा कर जीवन के प्रति गहन राग को स्फूर्त किया। इन कवियों में सूरसागर के रचयिता महाकवि सूरदास श्रेष्ठतम हैं जिन्होंने कृष्ण के मधुर व्यक्तित्व का अनेक मार्मिक रूपों में साक्षात्कार किया। ये प्रेम और सौंदर्य के निसर्गसिद्ध गायक हैं। कृष्ण के बालरूप की जैसी विमोहक, सजीव और बहुविध कल्पना इन्होंने की है वह अपना सानी नहीं रखती। कृष्ण और गोपियों के स्वच्छंद प्रेमप्रसंगों द्वारा सूर ने मानवीय राग का बड़ा ही निश्छल और सहज रूप उद्घाटित किया है। यह प्रेम अपने सहज परिवेश में सहयोगी भाववृत्तियों से संपृक्त होकर विशेष अर्थवान् हो गया है। कृष्ण के प्रति उनका संबंध मुख्यतसख्यभाव का है। आराध्य के प्रति उनका सहज समर्पण भावना : की गहरी से गहरी भूमिकाओं को स्पर्श करनेवाला है। सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे। वल्लभ के पुत्र बिट्ठलनाथ ने कृष्णलीलागान के लिए अष्टछाप के नाम से आठ कवियों का निर्वाचन किया था। सूरदास इस मंडल के सर्वोत्कृष्ट कवि हैं। अन्य विशिष्ट कवि नंददास और परमानंददास हैं। नंददास की कलाचेतना अपेक्षाकृत विशेष मुखर है।

मध्ययुग में कृष्णभक्ति का व्यापक प्रचार हुआ और वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग के अतिरिक्त अन्य भी कई संप्रदाय स्थापित हुए, जिन्होंने कृष्णकाव्य को प्रभावित किया। हितहरिवंश (.राधावल्लभी संप्र), हरिदास (.टट्टी संप्र), गदाधर भट्ट और सूरदास मदनमोहन आदि अनेक कवियों ने (.गौड़ीय संप्र) क कल्पनाएँ कीं। मीरा की भक्ति दांपत्यभाव की थी जो विभिन्न मतों के अनुसार कृष्णप्रेम की मार्मि स्फूर्त कोमल और करुण प्रेमसंगीत से आंदोतिल करती हैं। नरोत्तमदास:अपने स्वत, रसखान, सेनापति

आदि इस धारा के अन्य अनेक प्रतिभाशाली कवि हुए जिन्होंने हिंदी काव्य को समृद्ध किया। यह सारा कृष्णकाव्य मुक्तक या कथाश्रित मुक्तक है। संगीतात्मकता इसका एक विशिष्ट गुण है।

कृष्णकाव्य ने भगवान् के मधुर रूप का उद्घाटन किया पर उसमें जीवन की अनेकरूपता नहीं थी, जीवन की विविधता और विस्तार की मार्मिक योजना रामकाव्य में हुई। कृष्णभक्तिकाव्य में जीवन के माधुर्य पक्ष का स्फूर्तिप्रद संगीत था, रामकाव्य में जीवन का नीतिपक्ष और समाजबोध अधिक मुखरित हुआ। एक ने स्वच्छंद रागतत्व को महत्व दिया तो दूसरे ने मर्यादित लोकचेतना पर विशेष बल दिया। एक ने भगवान की लोकरंजनकारी सौंदर्यप्रतिमा का संगठन किया तो दूसरे ने उसके शक्ति, शील और सौंदर्यमय लोकमंगलकारी रूप को प्रकाशित किया। रामकाव्य का सर्वोत्कृष्ट वैभव रामचरितमानस"' के रचयिता तुलसीदास के काव्य में प्रकट हुआ जो विद्याविद् ग्रियर्सन की दृष्टि में बुद्धदेव के बाद के सबसे बड़े जननायक थे। पर काव्य की दृष्टि से तुलसी का महत्व भगवान् के एक ऐसे रूप की परिकल्पना में है जो मानवीय सामर्थ्य और औदात्य की उच्चतम भूमि पर अधिष्ठित है। तुलसी के काव्य की एक बड़ी विशेषता उनकी बहुमुखी समन्वयभावना है जो धर्म, समाज और साहित्य सभी क्षेत्रों में सक्रिय है। उनका काव्य लोकोन्मुख है। उसमें जीवन की विस्तीर्णता के साथ गहराई भी है। उनका महाकाव्य रामचरितमानस राम के संपूर्ण जीवन के माध्यम से व्यक्ति और लोकजीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन करता है। उसमें भगवान् राम के लोकमंगलकारी रूप की प्रतिष्ठा है। उनका साहित्य सामाजिक और वैयक्तिक कर्तव्य के उच्च आदर्शों में आस्था दृढ़ करनेवाला है। तुलसी की विनयपत्रिका"' में आराध्य के प्रति, जो कवि के आदर्शों का सजीव प्रतिरूप है, उनका निरंतर और निश्छल समर्पणभाव, काव्यात्मक आत्माभिव्यक्ति का उत्कृष्ट दृष्टांत है। काव्याभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों पर उनका समान अधिकार है। अपने समय में प्रचलित सभी काव्यशैलियों का उन्होंने सफल प्रयोग किया। प्रबंध और मुक्तक की साहित्यिक शैलियों के अतिरिक्त लोकप्रचलित अवधी और ब्रजभाषा दोनों के व्यवहार में वे समान रूप से समर्थ हैं। तुलसी के अतिरिक्त रामकाव्य के अन्य रचयिताओं में अग्रदास, नाभादास, प्राणचंद चौहान और हृदयराम आदि उल्लेख्य हैं।

रीतिकाल की पृष्ठभूमि

रीतिकाल में यद्यपि भक्ति, नीति, वीरता आदि अनेक विषयों पर कविताएं लिखी गई, किन्तु प्रधानता श्रृंगारिक रचनाओं की रही। वस्तुतः इस श्रृंगाराधिक्य के मूल में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियां कार्य कर रही थीं। जैसा कि डाॅचौहान ने लिखा हैं .," राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों ने रीतियुग के काव्य के श्रृंगारपरक, शौर्यपरक एवं प्रेमपरक आदि वर्ण्यविषयों की - पृष्ठभूमि तैयार की। समस्त रीतियुग के काव्य के, चाहे वह रीतिबद्ध धारा का काव्य हो, चाहे रीतिमुक्त धारा का काव्य हो, यही तीन वर्ण्य थे। दरबार के चमकदमकपूर्ण वातावरण ने तथा आश्रयदाता और - उसके दरबारियों को फड़काने वाली कलात्मक बारीकियों की प्रवृत्ति ने ऊहात्मक कथन, वचन विद्गधता, उक्तिवैचित्र्य-, वक्रोक्ति आदि की कलाप्रदर्शन की प्रवृत्ति बहुज्ञता -प्रवृत्तियों को जन्म दिया। पांडित्य-भंगिमा के अनेक रूपों वचन विद्ग्ध्ता-पक्ष में कथन-प्रदर्शन के रूप में उभरी और कला, उक्ति वैचित्र्य, वक्रोक्ति आदि रूपों में उभरी। उसके विविध कलाखराश की बारीकी और पच्चीकारी-शरूपों में तरा-, कटाव और खम उभारने की प्रवृत्ति थी, उसने उसमें शब्दचयन और शब्दालंकारों के सौंदर्य उत्पन्न करने की -

प्रवृत्ति को जन्म दिया। नारी अंगों के सौंदर्य वर्णन में उसके अंगों की गोलाइयों और उभारों को चित्रित करने कीप्रवृत्ति के मूल में मूर्ति एवं चित्रकला की तराशखराश-, कटाव औ खम तथा गोलाइयाँ उभारने की प्रवृत्ति का प्रभाव हैं। ये प्रवृत्तियाँ समस्त रीतियुगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ हैं जो केशव से लेकर बिहारी, देव, मतिराम, पद्माकर, घनानंद, बोध आदि सभी में परिलक्षित होती हैं।हिन्दी साहित्य में रीतिकाल रां . 1700 से 1900 तक स्वीकार किया जाता है। इस संपूर्ण कालावधि में निरंकुश राजतंत्र का बोलबाला रहा। कालांतर में मुगल सम्राट शाहजहाँ भारत का सम्राट था। शाहजहां का राज्यविस्तार दक्षिण में अहमद - नगर, गोलकुंडा, बीजापुर आदि रियासतों तक, उत्तर में कंधार तक और पश्चिम में सिन्ध से लेकर पूर्व में सिलहट तक था। राज्य में सुख, शांति, वैभवचक्र में पड़कर -विलास सभी कुछ था। किन्तु परिवर्तन- धीरे शाहजहां के समय में दक्षिण में उपद्रव शुरू हुए और उसकी मृत्यु की अफवाह -स्थिति बदली। धीरे उड़ी। उसकेपुत्रों में सिंहासन के लिए युद्ध प्रारंभ हो गया। छल प्रपंच की धूलि उड़ाती राजनीति का- रंजित हो उठा। दारा और औरंगजेब के मध्य संघर्ष बढ़ा। एक ओर कुशल राजनीतिज्ञ और -दामन रक्त कट्टर सुन्नी औरंगजेब था और दूसरी ओर ज्ञानी, सहिष्णु और दयालु दाग था। संघर्ष में औरंगजेब को विजय मिली, परंतु उसके अत्याचारों से यत्रतीय आकाश में तत्र विद्रोह भी होने लगे। औरंगजेब का भा- एक धूमकेतु की भांति उदय हुआ, जो न खुद सुखचैन -चैन से रह सका और न उसने जनता को ही खुख- शांति-से रहने दिया। इस प्रकार रीतियुग का उदय सुख, वैभवविलास में ह-ुआ तथा उसकी परिणति विप्लव, अव्यवस्था और अधःपतन में हुई। औरंगजेब के उत्तराधिकारी सर्वथा अयोग्य, अकर्मण्य, विलासी एवं पंगु सिद्ध हुए। देसी नरेशों के महल भी विलास में मुगलहरमों की होड़ ले रहे थे। ऐशोआराम का - जीवन, वैभव प्रदर्शन, रसिकता और विलास का उद्दाम नर्तन, ये सब उस काल की विशेषताएं थी। 'यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार जनता भी सामंतीय वातावरण और उसकी विशेषताओं के प्रति आकृष्ट थी। इन्हीं परिस्थितियों का प्रभाव उस युग के साहित्य पर पड़ा।

आधुनिक काल की पृष्ठभूमि

तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित हुआ। इसको हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ युग माना जा सकता है, जिसमें पद्य के साथसाथ गद्य-, समालोचना, कहानी, नाटक व पत्रकारिता का भी विकास हुआ।सं 1800 विके उपरांत भारत में अनेक यूरोपीय जातियां व्यापार के लिए आईं। उनके संपर्क से . यहां पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ना प्रारंभ हुआ। विदेशियों ने यहां के देशी राजाओं की पारस्परिक फूट से लाभ उठाकर अपने पैर जमाने में सफलता प्राप्त की। जिसके परिणामस्वरूप यहां पर ब्रिटिश साम्राज्य - प्रचार के-की स्थापना हुई। अंग्रेजों ने यहां अपने शासन कार्य को सुचारु रूप से चलाने एवं अपने धर्म लिए जनसाधारण की भाषा को अपनाया। इस कार्य के लिए गद्य ही अधिक उपयुक्त होती है। इस - निक युग की मुख्य विशेषता गद्य की प्रधानता रही। इस काल में होने वाले मुद्रण कला के कारण आधु विकास में महान योगदान दिया। स्वामी दयानंद ने भी आर्य समाज के ग्रंथ-आविष्कार ने भाषाों की रचना राष्ट्रभाषा हिंदी में की और अंग्रेज़ मिशनरियों ने भी अपनी प्रचार पुस्तकें हिंदी गद्य में ही छपवाईं। इस तरह विभिन्न मतों के प्रचार कार्य से भी हिंदी गद्य का समुचित विकास हुआ।इस काल में राष्ट्रीय भावना का भी विकास हुआ। इसके लिए श्रृंगारी ब्रजभाषा की अपेक्षा खड़ी बोली उपयुक्त समझी गई। समय की प्रगति के साथ गद्य और पद्य दोनों रूपों में खड़ी बोली का पर्याप्त विकास हुआ। भारतेंदु

बाबू हरिश्चंद्र तथा बाबू अयोध्या प्रसाद खत्रीने खड़ी बोली के दोनों रूपों को सुधारने में महान प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा द्वारा हिंदी साहित्य की सम्यक संवर्धना की।

इस काल के आरंभ में राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेंदु हरिश्चंद्र, जगन्नाथ दास रत्नाकर, श्रीधर पाठक, रामचंद्र शुक्ल आदि ने ब्रजभाषा में काव्य रचना की। इनके उपरांत भारतेंदु जी ने गद्य का समुचित विकास किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसी गद्य को प्रांजल रूप प्रदान किया। इसकी सत्प्रेरणाओं से अन्य लेखकों और कवियों ने भी अनेक भांति की काव्य रचना की। इनमें मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, नाथूराम शर्मा शंकर, ला. भगवान दीन, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद, गोपाल शरण सिंह, माखन लाल चतुर्वेदी, अनूप शर्मा, रामकुमार वर्मा, श्याम नारायण पांडेय, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रभाव से हिंदी-काव्य में भी स्वच्छंद (अतुकांत) छंदों का प्रचलन हुआ।हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। साहित्य के इतिहास में इसे गद्य-काल के नाम से जाना जाता है। वस्तुत: भारतेन्दु युग हिन्दी में विविध गद्य विधाओं के प्रवर्तन का काल है। भारतेन्दु को हिन्दी में नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। वे एक व्यक्ति से बढ़कर संस्था थे। उन्होंने अपने समानधर्मा लेखकों का मण्डल तैयार किया, जिसे 'भारतेन्दु मण्डल' के नाम से जाना जाता है। अपने समय के रचनाकारों के साथ मिलकर उन्होंने हिन्दी साहित्य में एक नवीन युग का सूत्रपात किया। यह नवीन युग काल, प्रवृत्ति, चेतना, विधा हर दृष्टि से नया था। नवीन युग की नई चेतना और विधा के वाहक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। इनका समय सन् 1850 से 1885 तक है। इसीलिए सामान्य तौर पर उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध को साहित्य में भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है।

भारतेंदु युगः काल विभाजन और नामकरण

भारतेंदु युग हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण कालखंड है, जो 19वीं सदी के उत्तरार्ध में उभर कर आया और भारतीय समाज, संस्कृति, और साहित्य में नये बदलावों का संकेतक बना। इस युग का काल विभाजन और नामकरण निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है:

काल विभाजन

भारतेंदु युग को सामान्यतः 1857 से 1900 ईस्वी के बीच का समय माना जाता है। इस कालखंड को निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं और प्रवृत्तियों के आधार पर विभाजित किया जा सकता है:

पूर्व भारतेंदु काल (1857-1873)

प्रारंभिक परिवर्तन: इस अवधि में भारतीय समाज में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के प्रभाव और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता का विकास हो रहा था।

प्रमुख साहित्यिक गतिविधियाँ: साहित्यिक और सामाजिक सुधारों की प्रारंभिक गतिविधियाँ शुरू हुईं, जिसमें राजा राममोहन राय जैसे सुधारकों का योगदान था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का काल (1873-1885)

- **उदय और प्रभाव**: इस अवधि में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्य, नाटक, पत्रकारिता और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **प्रमुख रचनाएँ**: 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'भारत दुर्दशा', 'सत्य हरिश्चंद्र' जैसी रचनाएँ इसी समय लिखी गईं।

उत्तर भारतेंदु काल (1885-1900)

- **विकास और प्रसार**: भारतेंदु की मृत्यु के बाद भी उनके द्वारा प्रारंभ की गई साहित्यिक और सांस्कृतिक धारा का विस्तार हुआ। उनके अनुयायियों और अन्य समकालीन लेखकों ने इस युग की परंपरा को आगे बढ़ाया।
- **प्रमुख साहित्यकार**: बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, अंबिका दत्त व्यास।

नामकरण

इस युग का नामकरण भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर किया गया है, जो इस कालखंड के प्रमुख और सबसे प्रभावशाली साहित्यकार थे। उन्हें 'हिन्दी नाट्य जगत का जनक' और 'हिन्दी साहित्य का भारतेंदु' कहा जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी और इसे आधुनिकता के साथ जोड़ा। उनके प्रयासों और योगदान के कारण ही इस युग को 'भारतेंदु युग' कहा गया।

भारतेंदु युग की विशेषताएँ

1. **सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता**

- समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और ब्रिटिश शासन की आलोचना।
- भारतीय संस्कृति, इतिहास और परंपराओं का पुनर्जीवन।

2. **भाषा और साहित्य का विकास**

- खड़ी बोली हिन्दी को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना।

- सरल और बोधगम्य भाषा का प्रयोग, जिससे आम जनता भी साहित्य से जुड़ सके।

3. **पत्रकारिता और नाटक**

- हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत और विकास। भारतेंदु ने 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया।
- हिन्दी नाटक को लोकप्रिय बनाना और सामाजिक मुद्दों पर आधारित नाटकों की रचना।

4. **रचनात्मक विविधता**

- काव्य, नाटक, निबंध, यात्रा वृतांत, और आलोचना जैसी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में रचनात्मकता।
- प्रमुख रचनाएँ: 'भारत दुर्दशा', 'सत्य हरिश्चंद्र', 'अंधेर नगरी', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'।

भारतेंदु युग हिन्दी साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जिसमें साहित्य को सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय जागरूकता और आधुनिकता के साथ जोड़ा गया। इस युग का नामकरण भारतेंदु हरिश्चंद्र के योगदान और प्रभाव को मान्यता देने के लिए किया गया है, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी और इसे जन-जन तक पहुँचाया। इस कालखंड का अध्ययन और विश्लेषण हिन्दी साहित्य के समृद्ध और विविध स्वरूप को समझने में महत्वपूर्ण है।

द्विवेदीयुग-

द्विवेदी युग हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण कालखंड है, जो 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में उभरा। इस युग का नाम इसके प्रमुख साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने हिन्दी साहित्य में गहन सुधार और नवजागरण की भावना को प्रोत्साहित किया। द्विवेदी युग को सामान्यतः 1900 से 1918 ईतक का समय माना जाता है। .

द्विवेदी युग का काल विभाजन

प्रारंभिक द्विवेदी युग)1900-1905)

- **विशेषताएँ**: इस अवधि में हिन्दी साहित्य में जागरूकता और सुधार की लहर शुरू हुई। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन शुरू किया, जिसने साहित्यिक जागरूकता को बढ़ावा दिया।

- **प्रमुख गतिविधियाँ**: सामाजिक और साहित्यिक सुधार की दिशा में प्रारंभिक प्रयास। भाषा और साहित्य में शुद्धता और सादगी की ओर ध्यान।

मध्यम द्विवेदी युग (1905-1912)

- **विशेषताएँ**: इस अवधि में द्विवेदी जी के संपादकीय कार्यों का गहरा प्रभाव पड़ा और हिन्दी साहित्य में नवजागरण की भावना प्रबल हुई।
- **प्रमुख गतिविधियाँ**: सामाजिक मुद्दों पर लेखन, साहित्यिक मानदंडों की स्थापना, और भारतीय संस्कृति व इतिहास के प्रति जागरूकता।

उत्तर द्विवेदी युग (1912-1918)

- **विशेषताएँ**: इस समयावधि में द्विवेदी जी के सुधारों का व्यापक प्रभाव दिखा और उनके अनुयायियों ने साहित्यिक दिशा को आगे बढ़ाया।
- **प्रमुख गतिविधियाँ**:हिन्दी गद्य और काव्य में नए प्रयोग, राष्ट्रीयता और सामाजिक सुधार की भावना का उदय।

द्विवेदी युग की विशेषताएँ

1. भाषा और शैली में सुधार

- द्विवेदी युग में खड़ी बोली हिन्दी को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास हुआ।
- भाषा को शुद्ध, सरल, और व्याकरणसम्मत बनाने पर जोर दिया गया।

2. सामाजिक और नैतिक जागरूकता

- इस युग में साहित्यकारों ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, और रूढ़ियों के खिलाफ लिखा।
- नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, और स्वदेशी आंदोलन जैसे सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

3. साहित्यिक विधाओं का विकास

- निबंध, कहानी, उपन्यास, और आलोचना जैसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ।
- काव्य में नैतिक और सामाजिक विषयों को प्रमुखता दी गई।

4. राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की भावना

- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव के कारण साहित्य में राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना प्रबल हुई।
- साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम के विचारों और आदर्शों को अपने लेखन में स्थान दिया।

द्विवेदी युग हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण और समृद्ध कालखंड है, जिसमें भाषा, शैली, और विषयवस्तु में गहन सुधार और नवजागरण की भावना का संचार हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में इस युग में साहित्यिक मानदंडों की स्थापना हुई और हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा मिली। इस युग का अध्ययन हिन्दी साहित्य के विकास और परिवर्तन को समझने में महत्वपूर्ण है।

छायावाद-

छायावाद हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट कालखंड है, जो लगभग 1918 से 1936 के बीच रहा। इस कालखंड ने हिन्दी काव्य में एक नई धारा और शैली का विकास किया, जिसे व्यक्तिगत अनुभूतियों, कल्पनाओं और रहस्यवाद से समृद्ध किया गया। छायावाद ने हिन्दी साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की और इसे आधुनिकता की ओर अग्रसर किया।

छायावाद की पृष्ठभूमि

छायावाद का उदय एक ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज और संस्कृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव, पश्चिमी साहित्य और विचारधारा का प्रभाव, और आधुनिकता की ओर बढ़ते कदमों ने इस साहित्यिक आंदोलन को प्रेरित किया। छायावादी कवियों ने पारंपरिक साहित्यिक धारा से अलग हटकर अपने अनुभवों, भावनाओं और कल्पनाओं को अभिव्यक्त किया।

छायावाद की पृष्ठभूमि को समझने के लिए हमें उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों का विश्लेषण करना होगा जब यह साहित्यिक आंदोलन उभरा। छायावाद का कालखंड लगभग 1918 से 1936 के बीच माना जाता है। इस अवधि में भारतीय समाज में महत्वपूर्ण बदलाव हो रहे थे, जो छायावादी साहित्य के विकास में सहायक बने। यहाँ छायावाद की पृष्ठभूमि के प्रमुख घटकों का विवरण दिया गया है:

1. **सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि**

स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय जनमानस को गहराई से प्रभावित किया। अंग्रेजी शासन के खिलाफ बढ़ती नाराजगी और स्वतंत्रता की आकांक्षा ने समाज में राष्ट्रीयता और स्वाभिमान की भावना को बढ़ावा दिया।

- इस काल में महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ा, जिसने साहित्यकारों को राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की भावना से ओतप्रोत रचनाएँ लिखने के लिए प्रेरित किया।

पश्चिमी विचारधारा का प्रभाव

- अंग्रेजी शिक्षा और पश्चिमी साहित्य के संपर्क में आने से भारतीय समाज में आधुनिकता और प्रगतिशीलता के विचार उभरे। इन विचारों ने पारंपरिक मान्यताओं और रूढ़ियों को चुनौती दी।
- रूमानी और प्रतीकवादी)Symbolist) कवियों के विचारों ने छायावादी कवियों को गहरे भावनात्मक और रहस्यमय विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित किया।

2. सांस्कृतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि

बंगाल का नवजागरण

- बंगाल में शुरू हुआ नवजागरण आंदोलन, जो राममोहन राय, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे साहित्यकारों द्वारा प्रेरित था, ने पूरे भारत में सांस्कृतिक जागरूकता और साहित्यिक नवजागरण को बढ़ावा दिया।
- रवींद्रनाथ टैगोर के काव्य और साहित्य ने हिन्दी कवियों को गहरे भावनात्मक और व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।

हिन्दी साहित्य का विकास

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकारों के प्रयासों से हिन्दी साहित्य में पहले से ही सुधार और नवजागरण की लहर चल रही थी।
- द्विवेदी युग ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी और भाषा को सरल, सुगम और व्यावहारिक बनाया। इस पृष्ठभूमि पर छायावाद का उदय हुआ, जिसने भाषा और शैली को और अधिक संवेदनशील और भावप्रवण बनाया।

आध्यात्मिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि-

अध्यात्मवाद और रहस्यवाद

छायावादी कवियों पर भारतीय दर्शन, विशेषकर वेदांत और उपनिषदों का गहरा प्रभाव था। उन्होंने आत्मान्वेषण, आध्यात्मिकता और रहस्यवाद को अपने काव्य का प्रमुख विषय बनाया।

स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो के विचारों ने भी इस काल के साहित्यकारों को प्रभावित किया, जिन्होंने आत्मा, ब्रह्मांड और परमात्मा के रहस्यों की खोज की।

रूमानी प्रवृत्तियाँ

पश्चिमी साहित्य के रूमानी आंदोलन ने भी छायावादी कवियों को प्रभावित किया। इस आंदोलन ने प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य, और व्यक्तिगत भावनाओं को प्रमुखता दी।

छायावादी कवियों ने रूमानी काव्य की प्रवृत्तियों को अपनाया और उसे भारतीय संदर्भ में ढाला।

प्रमुख छायावादी कवि और उनका योगदान

जयशंकर प्रसाद

प्रमुख रचनाएँ: 'कामायनी', 'आँसू', 'लहर'।

ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं के माध्यम से आधुनिक जीवन की समस्याओं का चित्रण। गहन दार्शनिकता और आध्यात्मिकता।

सुमित्रानंदन पंत

प्रमुख रचनाएँ: 'पल्लव', 'गुंजन', 'ग्रंथि'।

प्रकृति और सौंदर्य का सूक्ष्म और काव्यात्मक चित्रण। व्यक्तिगत अनुभूतियों का प्रकृति के साथ सामंजस्य।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रमुख रचनाएँ: 'सरोज स्मृति', 'परिमल', 'कुकुरमुत्ता'।

समाज की विसंगतियों और व्यक्तिगत संवेदनाओं का मिश्रण। भाषा और शैली में नवीनता और प्रयोग।

महादेवी वर्मा

प्रमुख रचनाएँ: 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा'।

प्रेम, पीड़ा, और आध्यात्मिकता का गहन चित्रण। आत्मान्वेषण और सूक्ष्म संवेदनाएँ।

छायावाद की पृष्ठभूमि विविध और जटिल है, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक तत्वों का मेल है। इस कालखंड ने हिन्दी काव्य को नई दिशा दी और इसे गहन भावनात्मक और व्यक्तिगत अनुभूतियों से समृद्ध किया। छायावादी कवियों के योगदान ने हिन्दी साहित्य को एक नई ऊँचाई दी और इसे आधुनिकता और संवेदनशीलता की ओर अग्रसर किया।

छायावाद ने व्यक्तिगत अनुभूतियों और आत्मविश्लेषण को प्रमुखता दी। कवियों ने अपने आंतरिक अनुभवों और संवेदनाओं को काव्य में व्यक्त किया।यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वनियंत्रण की भावना -।छायावाद की कविताओंका परिचायक है में रहस्य, अदृश्यता, और आध्यात्मिकता की प्रधानता होती है।

छायावादोत्तर-

छायावादोत्तर पृष्ठभूमि को समझने के लिए हमें छायावाद के बाद के हिन्दी साहित्य के विकास, उसकी प्रवृत्तियों, और सामाजिकछायावाद के बाद हिन्दी राजनीतिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना होगा।-साहित्य में कई महत्वपूर्ण आंदोलनों और बदलावों का उदय हुआ, जो साहित्य की नई दिशाओं और प्रवृत्तियों का परिचायक बने। छायावादोत्तर काल में विशेष रूप से प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, और आधुनिकतावाद जैसी प्रवृत्तियाँ उभरीं।

1. सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता प्राप्ति

- 1947 में भारत की स्वतंत्रता ने साहित्यिक परिदृश्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया। स्वतंत्रता आंदोलन की संघर्षशीलता और उसके बाद के आशा और उत्साह ने साहित्य में नई ऊर्जा और दृष्टिकोण का संचार किया।
- विभाजन की त्रासदी और उसके बाद के सांप्रदायिक दंगों ने साहित्यकारों को गहरे सामाजिक और मानवीय मुद्दों पर लिखने के लिए प्रेरित किया।

वैश्विक घटनाएँ और प्रभाव

- द्वितीय विश्व युद्ध और उसके बाद की राजनीतिक परिस्थितियों ने वैश्विक स्तर पर साहित्यिक विचारधाराओं को प्रभावित किया। अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, और समाजवादी विचारधाराओं ने साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला।
- इन विचारधाराओं ने साहित्यकारों को सामाजिक न्याय, समानता, और श्रमिकों के अधिकारों जैसे मुद्दों पर केंद्रित रचनाएँ लिखने के लिए प्रेरित किया।

2. प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

प्रगतिवाद)1936-1947)

- प्रगतिवाद ने साहित्य को सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों से जोड़ा। इस आंदोलन ने समाज के वंचित और शोषित वर्गों की आवाज को प्रमुखता दी।
- प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना)1936) ने इस आंदोलन को संस्थागत रूप दिया और साहित्यकारों को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित किया।
- **प्रमुख साहित्यकार**: प्रेमचंद, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, सुमित्रानंदन पंत (प्रगतिवादी दौर), और महादेवी वर्मा।

प्रयोगवाद)1943-1960)

- प्रयोगवाद ने साहित्य में नये प्रयोगों और नवाचारों को प्रोत्साहित किया। इसने छायावाद की रोमांटिकता से हटकर यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया।
- इस आंदोलन में भाषा, शैली, और विषय वस्तु में नवीनता और प्रयोग को महत्व दिया गया।
- **प्रमुख साहित्यकार**: अज्ञेय, मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय।

नई कविता)1950-1960)

- नई कविता ने हिन्दी कविता को छायावाद की पारंपरिक भावनात्मकता से अलग कर एक नया रूप दिया। इसने व्यक्तिगत अनुभूतियों, सामाजिक समस्याओं, और अस्तित्ववादी चिंताओं को प्रमुखता दी।
- नई कविता में भाषा का अधिक प्रयोगशील और संजीदा उपयोग किया गया।
- **प्रमुख साहित्यकार**: अज्ञेय, रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह, केदारनाथ सिंह।

आधुनिकतावाद)1960 के बाद(

- आधुनिकतावाद ने साहित्य को व्यक्तिवाद, अस्तित्ववाद, और आधुनिक जीवन की जटिलताओं से जोड़ा। इस प्रवृत्ति में पारंपरिक मान्यताओं और रूपकों को चुनौती दी गई।
- इस आंदोलन ने व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक वास्तविकताओं के बीच के द्वंद्व को चित्रित किया।

- **प्रमुख साहित्यकार**: नरेश मेहता, श्रीकांत वर्मा, रघुवीर सहाय।

3. प्रमुख साहित्यकार और उनकी रचनाएँ

अज्ञेय (सच्चिदानंदहीरानंदवात्स्यायन)

प्रमुख रचनाएँ: 'शेखरएकजीवनी :', 'अपनेअपनेअजनबी', 'नदीकेद्वीप'।

योगदान: नईकविता और प्रयोगवाद के प्रमुखसाहित्यकार।उन्होंनेभाषाऔरशैलीमेंनवाचारकिया।

मुक्तिबोध (गजाननमाधवमुक्तिबोध)

प्रमुख रचनाएँ: 'चांदकामुंहटेढ़ाहै', 'क्लाडियसकीवापसी', 'एकसाहित्यिककीडायरी'।

योगदान: गहनआत्मविश्लेषण और समाज की वास्तविकताओं का यथार्थवादी चित्रण।

धर्मवीरभारती

प्रमुख रचनाएँ: 'सूरजकासातवांघोड़ा', 'गुनाहोंकादेवता', 'कनुप्रिया'।

योगदान: सामाजिकऔरमनोवैज्ञानिकदृष्टिकोणकासमावेश।

रघुवीरसहाय

प्रमुख रचनाएँ: 'सीढ़ियोंपरधूप', 'हंसोहंसोजल्दीहंसो', 'लोगभूलगएहैं'।

योगदान: सामाजिक विडंबनाओं और यथार्थ कासूक्ष्मचित्रण।

छायावादोत्तर पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन और नवाचार हुए। प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, और आधुनिकतावाद जैसी प्रवृत्तियों ने साहित्य को नए आयाम और गहराई दी। इन आंदोलनों ने हिन्दी साहित्य को सामाजिक, राजनीतिक, और व्यक्तिगत अनुभवों के संदर्भ में समृद्ध और विस्तृत किया। साहित्यकारों ने न केवल अपनी आत्माभिव्यक्ति की बल्कि समाज की समस्याओं और चिंताओं को भी स्वर दिया, जिससे हिन्दी साहित्य और भी व्यापक और सार्थक बन गया।

सारांश

हिन्दी साहित्य का इतिहास विभिन्न कालखंडों और प्रवृत्तियों से समृद्ध है, जिसमें प्रत्येक काल का अपना विशिष्ट महत्व और योगदान है। यह इतिहास भारतीय समाज और संस्कृति के विकास को भी प्रतिबिंबित करता है, और इसके अध्ययन से साहित्यिक विकास की विविध दिशाओं और धारणाओं का व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है।हिन्दी साहित्य का इतिहास एक विस्तृत और समृद्ध विषय है, जिसमें प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक की विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों और आंदोलनों का समावेश है।

यह इतिहास भारतीय समाज और संस्कृति के विकास को भी प्रतिबिंबित करता है, और इसके अध्ययन से साहित्यिक विकास की विविध दिशाओं और धारणाओं का व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। हिन्दी साहित्य न केवल मनोरंजन और शिक्षा का साधन रहा है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक जागरूकता का माध्यम भी रहा है।

<u>कीवर्ड्स (संकेत शब्द)-</u> आदिकाल, काल विभाजन, नामकरण, वीरगाथा काल, चारणकाल, वीरकाल

अभ्यास (अति लघुउत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर कौन से काल विभाजन किये गये हैं?

2. काल विभाजन की पृष्ठभूमि आधार पर काल विभाजन का नामोल्लेख कीजिये।

प्रश्न (दीर्घ उत्तरीय मूलक प्रश्न)

1. हिंदी साहित्य इतिहास को कितने भागो में बांटा गया है विवेचना कीजिये
2. हिंदी साहित्य में काल विभाजन की समस्या पर विचार कीजिये

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायण लाल प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, सं. 1958
- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं. 2007